RNI No. RAJHIN/2013/50503

देव चेतना

हिन्दी मासिक

वर्ष : 13 अंक : 7 जयपुर प्रकाशन तिथि : 5 सितम्बर, 2025 मूल्य : 20/- पृष्ठ-36

देव चेतना पत्रिका के प्रेरणा स्रोत एवं प्रधान संरक्षकगण

स्व.श्री रामगोपाल गार्ड, प्रेरणा स्रोत
श्री कालूलाल गुर्जर, प्रधान संरक्षक
श्री भौंरेलाल बागड़ी, प्रधान संरक्षक
श्री सरदारसिंह चेची, प्रधान संरक्षक
श्री अशोक गार्ड, प्रधान संरक्षक
श्री पुरुषोत्तम फागणा, प्रधान संरक्षक
श्री रतनलाल चेची, प्रधान संरक्षक
श्री पृथ्वीसिंह चौहान, प्रधान संरक्षक
रामलाल गुंजल, प्रधान संरक्षक
श्री घनश्याम तंवर, प्रधान संरक्षक

डॉ. दक्षा जोशी, प्रधान संरक्षक
डॉ. कुलदीप महुआ, प्रधान संरक्षक
श्री अमरसिंह धाभाई, प्रधान संरक्षक
श्री शैतान सिंह गुर्जर, प्रधान संरक्षक
श्री गोपाल सिंह गुर्जर, प्रधान संरक्षक
तिलकराज बैंसला, प्रधान संरक्षक
कर्नल चौ. देवेन्द्र सिंह, प्रधान संरक्षक
श्री रामजीलाल गुर्जर पटवारी, प्रधान संरक्षक
श्री इन्द्रराज विधूड़ी, प्रधान संरक्षक
श्री नानजीभाई गुर्जर, प्रधान संरक्षक
श्री कन्हैयालाल सराधना, प्रधान संरक्षक

गुर्जर कुल कल्याणी इतिहास पुरुष वीर गुर्जरः जननी जाया मातृशक्ति

आर्य श्रेष्ठ गुरुत्तर गुरु वीर गुर्जरः ऋषि प्रज्ञा शक्ति साक्षी आद्या प्रकृति
ईंटों में श्याम दर्शन प्रतीक मातृ-पितृ कुल 36 शैव शाक्त तत्व ज्ञान प्रदायिनी
कुल कल्याणी गुर्जर कन्या गायत्री सावित्री विद्या
श्री देवनारायण फड् पाट्ज्योति अपौरुषेय लोक वेदवार्ता विज्ञान
अनहद नाद शब्द ब्रह्म शब्दार्थ पराऽपरा गुर्जर देव वाणी
सृष्टि कर्त्ता योग अपौरुषेय बगड़ावत भारत लोक वेदवार्ता विज्ञान

देव चेतना पत्रिका के प्रेरणा स्रोत एवं प्रधान संरक्षकगण

श्री चन्द्रशेखर बसवा, प्रधान संरक्षक · श्री अमरसिंह कसाना, प्रधान संरक्षक · श्री गोपाल धाभाई, प्रधान संरक्षक · श्री लक्ष्मणसिंह कसाना, जयपुर- प्रधान संरक्षक · श्री ब्रह्मसिंह गुर्जर, प्रधान संरक्षक · श्री शान्तिलाल गुर्जर, प्रधान संरक्षक · श्री बुद्धाराम चाड़, प्रधान संरक्षक · श्री देवनारायण लटाला, प्रधान संरक्षक · श्री पी.सी. अवाना, प्रधान संरक्षक · महन्त श्री दयालनाथजी, प्रधान संरक्षक

दामोदर गुर्जर, प्रधान संरक्षक · श्री राजेश लोमोड़ एडवोकेट, प्रधान संरक्षक · श्री विजय सिंह डोई, प्रधान संरक्षक · डॉ. रेखासिंह गुर्जर, प्रधान संरक्षक · श्री विजयसिंह कसाना, प्रधान संरक्षक · श्री जगदीश रावत, प्रधान संरक्षक · श्री चन्द्रभान अवाना, प्रधान संरक्षक · श्री लखन पटेल, प्रधान संरक्षक · मन्नालाल प्रधान, कोटा, प्रधान संरक्षक · श्री बाबूलाल छेपट, प्रधान संरक्षक

श्री सुखराम गुर्जर, प्रधान संरक्षक · श्री जगदीश गुर्जर, प्रधान संरक्षक · डॉ. अमित सिंह, प्रधान संरक्षक · श्री जगदीश भड़क, प्रधान संरक्षक · इन्द्र चन्द गुर्जर, प्रधान संरक्षक · श्री मनमोहन फागणा, प्रधान संरक्षक · श्री कन्हैयालाल छावड़ी, प्रधान संरक्षक · श्री नीरज पटेल, प्रधान संरक्षक · श्री गोविन्द गुर्जर, प्रधान संरक्षक · श्री सांवरलाल गुर्जर, प्रधान संरक्षक

श्री चेतन गुर्जर, प्रधान संरक्षक · श्री गौरीशंकर डोई, प्रधान संरक्षक · चौ. शिवपाल सिंह, प्रधान संरक्षक · विजयलाल सराधना, प्रधान संरक्षक · श्री राजेन्द्र दौराता, जयपुर- प्रधान संरक्षक · श्री अमरसिंह भगत, मिलकपुर-प्रधान संरक्षक · सत्यनारायण सेठ, दाबादेह, कोटा, प्रधान संरक्षक · श्री शंकरलाल कसाना, प्रधान संरक्षक · मेवाराम छावड़ी, प्रधान संरक्षक · फूलचन्द चेलरवाल, भैरुखेजड़ा, जयपुर, प्रधान संरक्षक · बजरंग लाल गुर्जर, जिलाध्यक्ष-झालावाड़, प्रधान संरक्षक

श्री जगजीतसिंह-स्व.श्रीमती चांद सिराधना, प्रधान संरक्षक · श्री भंवरलाल गुर्जर, प्रधान संरक्षक · श्री सूरतराम गुर्जर, प्रधान संरक्षक · श्रीमती सावित्री गुर्जर, प्रधान संरक्षक · श्री फतेहसिंह चेची, प्रधान संरक्षक · श्री धनराज गुर्जर, चेयरमैन, प्रधान संरक्षक · हलवाई श्री घीसू गुर्जर, प्रधान संरक्षक · श्री डी.एस. लोहमोड़, प्रधान संरक्षक · एडवोकेट बंशीधर गुर्जर, प्रधान संरक्षक · श्री सुरेश गुर्जर, कोटा, प्रधान संरक्षक

श्रीमती मंजू धाभाई, प्रधान संरक्षक · डॉ. बबीता सिंह, प्रधान संरक्षक · श्री ओमप्रकाश गुर्जर, प्रधान संरक्षक · श्री रघुनाथ गुर्जर (केमरी), प्रधान संरक्षक · श्री रामस्वरूप सराधना, प्रधान संरक्षक · श्री शांतिलाल (जिंदल), प्रधान संरक्षक · श्री गौरव गुर्जर, मुख्य संरक्षक · श्री ऋषिकेश गुर्जर, मुख्य संरक्षक · श्री गोवर्धन लाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक · श्री भँवरलाल चौपड़ा, मुख्य संरक्षक

श्री दयाराम गुर्जर, मुख्य संरक्षक · श्री रामकरण कसाना, मुख्य संरक्षक · श्री मदनलाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक · श्री बुधराम गुर्जर, मुख्य संरक्षक · श्री सुमेर सिंह मणकस, मुख्य संरक्षक · श्री किशनलाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक · श्री रामकिशन गुर्जर, मुख्य संरक्षक · श्री महावीर खटाणा, मुख्य संरक्षक · श्री अर्जुनलाल बोकण, मुख्य संरक्षक · महावीर गुर्जर, मुख्य संरक्षक

श्री पी.डी. गुर्जर, मुख्य संरक्षक · श्री खेमसिंह बैंसला, मुख्य संरक्षक · श्री श्योजीराम बागड़ी (मोखमपुरा वाले), मुख्य संरक्षक · श्रीमती बन्नी देवी, मुख्य संरक्षक · श्री मांगीलाल गुर्जर (दुगार) मुख्य संरक्षक · श्री मनोहरलाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक · श्री गिरधारीलाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक

RNI No. RAJHIN/2013/50503

देव चेतना

हिन्दी मासिक

सामाजिक, राजनैतिक समाचार, आध्यात्मिक ज्ञान, धर्म, दर्शन, इतिहास, साहित्य-कला एवं संस्कृति की अमृतमयी पत्रिका

वर्ष : 13 अंक: 7 जयपुर प्रकाशन तिथि: 5 सितम्बर, 2025 मासिक

:: अनुक्रम ::

1. सम्पादकीय... दिव्य समग्र श्री देवनारायण अवतार... 4-7
2. श्री देवनारायण धर्म ध्वज पदयात्रा महिमा 8-10
3. गृहराज्यमंत्री बेढ़म के जन्मदिन पर बधाईयों का ताँता 10
4. ऐतिहासिक महापुरुषों के संबंध में भारतवर्ष का इतिहास 11-18
5. गुर्जर साम्राज्यकालीन ऐतिहासिक धार्मिक स्मारक 19-21
6. स्त्री-पुरुष देह अन्तरंग नर-नारी प्रज्ञा प्रेम जीवनकला 21-22
7. भादवीं छठ : नीमच में शोभायात्रा व भीलवाड़ा में मेला 23-24
8. आशापुरा मानव कल्याण ट्रस्ट द्वारा प्रकृति पर्यावरण व मेवाड़ इतिहास में माता पन्नाधाय की भूमिका संगोष्ठी 25-26
9. अविनाशी युगल तत्व स्त्री-पुरुष दाम्पत्य जीवन दृष्टि दर्शन 27-28
10. शिक्षक : ज्ञान का दीपक व समाज का आधार 28-29
11. दिव्य श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर विशेष 30-32
12. राकेश गुर्जर को मातृशोक 32
13. गुर्जर लोक संस्कृति में प्रचलित गुर्जर रोट महोत्सव 33-34
14. स्व. राजेन्द्र गुर्जर (दौराता) को भुलाए न भूल पाएंगे 34

सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र जयपुर शहर न्यायालय होगा।
पत्रिका में प्रकाशित पठनीय लेख/सामग्री के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है।
पत्रिका प्रकाशन का इस सम्बन्ध में कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यतीन्द्र कुमार वर्मा
सम्पादक- वीरगुर्जर, लोनी, मेरठ (उ.प्र.)
स्व. श्री रामगोपाल गार्ड
प्रदेशाध्यक्ष-राज.गुर्जर महा.,जयपुर

प्रकाशन / प्रधान संरक्षक :
कालूलाल गुर्जर
पूर्व मंत्री, सरकारी मुख्य सचेतक, राज.सरकार

प्रकाशक/सम्पादक :
मोहनलाल वर्मा- मो. 9782655549

प्रकाशन व्यवस्थापक :
सरदार सिंह चेची- मो. 9829063710

प्रबन्ध सम्पादक :
वी.बी. जैन- मो. 9261640571

सह-सम्पादक :
डॉ. दक्षा जोशी-अहमदाबाद (गुजरात)
भावना गुर्जर- मो. 8890499200
अमरसिंह कसाना- मो. 9460875478
छीतरलाल कसाना- मो. 9929560765
शैतान सिंह गुर्जर- मो. 9414315639
देवनारायण रग्गल- मो. 9414321012

विधि सलाहकार :
प्रहलाद सिंह अवाना- मो. 9414752520
हजारीलाल सराधना- मो. 9414752519

सीकर संवाददाता : भंवर सिंह धाभाई
समस्त पद अवैतनिक हैं।

सम्पादकीय कार्यालय: 3714, कालों का मौहल्ला, के.जी.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302003
E-mail:devchetnanews@gmail.com

देव चेतना मासिक पत्रिका सहयोग राशि

प्रधान संरक्षक 11,000/-
मुख्य संरक्षक 5,100/-
पंचवर्षीय - 1100/-

❶ **बैंक खाता : मोहनलाल वर्मा**
SBI, जौहरी बाजार, जयपुर
A/c No. 61163439684
IFSC: SBIN0031029

❷ **Bank A/c : DEV CHETNA**
THE RAJASTHAN URBAN CO-OPERATIVE BANK LTD.
A/c No. 96000409474
IFS Code : UTIB0SRUCB1

दिव्य समग्र श्री देवनारायण अवतार लीला दृष्टा सुभट्ट (योद्धा) छोछू भाट परम्परा

जब-जब इस धरती पर धर्म की पुन: स्थापना के लिए भगवान ने अवतार लिया, तब-तब उनके साथ कुछ ऐसी दिव्य आत्माएं भी प्रकट हुईं जिन्होंने ईश्वर के कार्यों को पूर्णत्व तक पहुँचाया।

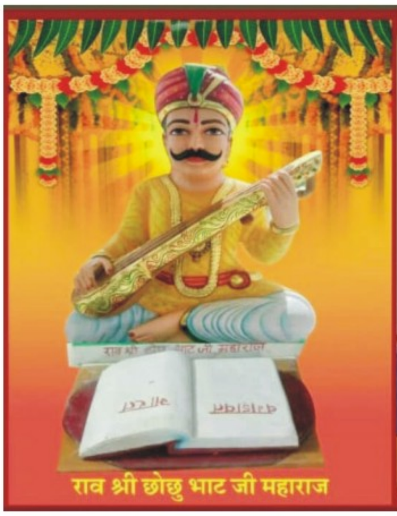

हर युग में दिव्य आत्मा का जन्म हुआ जैसे राम जी के साथ हनुमान जी वैसे ही बगड़ावत कुल के श्री छोछू भाट जी महाराज ऐसी ही एक दिव्य ज्योति थे जिन्होंने भगवान विष्णु के अवतार श्री देवनारायण भगवान के बगड़ावत कुल के बारे में जानकारी, धार्मिक अभियान में पथप्रदर्शक, मार्गदर्शक, रचयिता, अखंड आस्था, सेवा और त्याग से स्वयं को समर्पित कर दिया।

जैसे त्रेतायुग में हनुमान जी श्रीराम के अनन्य सहयोगी बने, वैसे ही छोछू भाट जी महाराज देवनारायण जी के प्रत्येक कार्य, युद्ध, यज्ञ और सामाजिक अभियान में एक अदृश्य शक्ति बनकर साथ चले। उन्होंने अपने निजी सुख-दुख, परिवार, और जीवन की परवाह किए बिना देवधणी का साथ और बगड़ावत कुल के इतिहास को ही जीवन का परम कर्तव्य मान लिया।

आज अगर हम बगड़ावत 24 वीरों का इतिहास, त्याग और बलिदान जानते हैं सारा श्रेय श्री छोछू भाट जी को दिया जाता हैं। बगड़ावत इतिहास के रचयिता- कुल के गौरव श्री छोछू भाट जी महाराज ही हैं।

वे केवल एक मानव नहीं, बल्कि धर्मयुद्ध के साक्षी, इतिहास के संरक्षक और ईश्वरीय योजना के रचयिता थे। उन्होंने न सिर्फ शब्दों से, बल्कि संपूर्ण जीवन से देवनारायण जी की लीला और कार्यों को युगों-युगों तक अमर कर दिया।

साथ देणो तो एसो देणो जैसे छोछू भाट जी ने दियो श्रीदेवनारायण को।

राजस्थान के जनजीवन में भाट जाति का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राय: सभी जातियों के अपने-अपने भाट होते हैं। भाट अपनी बहियों में अपने यजमानों की पीढ़ी दर पीढ़ी वंशावली कविता शैली में संग्रहित रखते हैं। विवाह समारोह तथा विशिष्ट प्रसंगों पर ये यजमानों के सम्मुख उसका वाचन करते हैं, परिवार में नये जन्मे शिशु का जन्मांकन कविता रूप करते हैं और नेगचार प्राप्त कर अपना भरण-पोषण करते हैं। संग्रहित इन वंशावलियों, कविताओं से इतिहास और शोध कार्यों में बड़ी सहायता मिलती रही है। कई भाटों ने उत्कृष्ट काव्य सृजन किया है। छोछू भाट भी इसी श्रृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी रहा है। यह बगड़ावतों का बही भाट था। इसका उल्लेख किए बिना बगड़ावतों को पूरे रूप में जानना समझना मुश्किल होगा।

छोछू भाट को कोई भोपा सेंसु बोलता है तो कोई चोचू। यह केवल उच्चारण का भेद है। क्षेत्रीय बोलियों के उच्चारण और इसके लहजे में यह फर्क आना स्वाभाविक है। आरंभ से लेकर अंत तक संपूर्ण महागाथा में छोछू भाट की उपस्थिति बनी रहती है। यह कई महत्वपूर्ण भूमिकाएं अदा करते हैं। वह भाट जिसका, बगड़ावतों को उनके पूर्वजों के नाम और इतिहास बोध करवाने का पारम्परिक पैतृक धंधा है और बिरदावली बोलकर अपने यजमानों को विरोचित कार्य के लिए प्रेरित कर उन्हें जोश दिलाना उनका परम्परागत कर्तव्य है। इस कर्तव्य को निभाने में वह सदैव तत्पर रहे और उन्होंने निरंतर सफलता प्राप्त की। छोछु भाट स्वयं संगीतज्ञ हैं। वह ब्रह्म वीणा बजाने में पारंगत है। उनकी वीणा पर पशु-पक्षी तक रीझ जाते

थे। बगड़ावत उनको बड़ा मान सम्मान देते थे। छोछु भाट गायक, वादक, कवि एवं वीर योद्धा तो थे ही इसके साथ-साथ लगन के धनी, स्वामीभक्त, इतिहासज्ञ, दूरदृष्टा, बुद्धिमान, साहसी, विनोदी, विदूषक हँसी-मजाक से परिपूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी थे। गाथा में उन्हें चलता पुरजा और तुरंत बुद्धि का धनी दर्शाया गया है। छोछु भाट श्री देवनारायण के प्रत्येक कार्य, युद्ध, यज्ञ और सामाजिक अभियान में एक अदृश्य शक्ति बनकर साथ चले। उन्होंने अपने निजी सुख-दुख परिवार और जीवन की परवाह किए बिना देवधणी का साथ और बगड़ावत कुल के इतिहास को ही जीवन का परम कर्तव्य मान लिया। आज अगर हम बगड़ावत 24 वीरों का इतिहास त्याग और बलिदान जानते हैं तो इसका समस्त श्रेय बाबा छोछु भाट को दिया जाता है। बगड़ावत इतिहास के रचयिता कुल के गौरव छोछु भाट ही हैं। वे केवल एक मानव नहीं बल्कि धर्मयुद्ध के साक्षी, इतिहास के संरक्षक और ईश्वरीय योजना के रचयिता थे। उन्होंने न सिर्फ शब्दों से बल्कि संपूर्ण जीवन से भगवान श्री देवनारायण की लीला और कार्यों को युगों-युगों तक अमर कर दिया।

गुर्जर जाति के भोज बगड़ावत लोकगाथा का समाजशास्त्रीय अध्ययन

शोध छात्रा- सीमा वैष्णव (समाज शास्त्र)
मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
डॉ. एच.एम.कोठ्यारी, शोध निर्देशक

बद्रीलाल सांगावत

रामावतार राव

शोध आलेख सार बगड़ावत लोकगाथा देवजी और बगड़ावतों से सम्बद्ध एक काव्य है जो राजस्थान में मुख्यतः गुर्जरों (भोपों) द्वारा गाया जाता है। इस काव्य के सम्बन्ध में महामहोपाध्याय श्री हरप्रसाद शास्त्री ने लिखा है कि ये भाट जातियों में सन् 1200 ई. के आसपास छोछू नामक कवि हुआ जिसने सर्वप्रथम वीर बगड़ावत बन्धुओं के विषय में कीर्ति श्लोक लिखे जिसकी संख्या 1500 बताई जाती है।

मूल शब्द बगड़ावत, वंशावली, गुर्जर, लोकगाथा

भूमिका : बगड़ावतों की वंशावली एवं उनके कार्यकाल अवधि के बारे में इतिहासकारों ने कोई ठोस निष्कर्ष पेश नहीं किये है। इतिहासकारों ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर लेशमात्र भी रूचि नहीं दर्शायी और न ही कोई प्रबन्ध कार्य किये। ऐसा प्रतीत होता है कि इतिहासकारों ने जानबूझकर तत्कालीन सामन्ती और अधिनायकवादी माहौल के कारण बगड़ावतों की महान लोकगाथा की अनदेखी की है। मगर जनमानस ने इस गाथा को पीढी दर पीढ़ी बनाये रखा। इतिहासकारों ने बगड़ावतों की सिर्फ सुनी सुनाई बातों के आधार पर उनका ब्यौरा दिया है, जिसके बारे में सूक्ष्म और तोड़मरोड़कर। कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं-

सर जम्स केम्पवेल महोदरा (बम्बई गजेटियर भाग (9) लिखते हैं बाघरावतों के पूर्व पुरुष हरिराम जी सोलंकी बड़े वीर पुरूष थे और चौहान राजा अजयपाल से उनके सम्बन्ध थे। चामुण्डा के बाघ को मार उसके सिर को लेकर जब वे पुष्कर स्नान को गये, तो चौहान राजा की बहिन नील देवी, उनके वीर रूप पर मोहित हो गई और स्वयं छोछु भाट के 1,50,000 श्लोकों की रचना का उल्लेखन किया है।

पं. हरप्रसाद शास्त्री ने राजस्थान में राजस्थानी साहित्य की खोज में लिखा है राजपूताना में हमको सबसे प्राचीन भाट कवि छोछू का पता चलता है जिसने विक्रम संवत् की तेरहवीं शताब्दी के मध्य बगड़ावत बन्धुओं का यशोगान किया था। कहते हैं कि उसकी रचना 1,50,000 श्लोकात्मक थी। बगड़ावत 24 भाई और एक बहिन थे। बगड़ावतों का प्रभाव एक और अजमेर से जोधपुर में बिलाड़ा तक और दूसरी ओर गोठ तक फैला था। भोज का पुत्र देव या देवजी था, जिसने भोपों की नई सम्प्रदाय चालू की थी। बिलाड़ा के पास हर्ष नामक गांव में बगड़ावतों की बैठक थी, जहां उनके बनवाए हुए मन्दिर और तालाब अब भी मौजूद हैं। इस मन्दिर में विक्रम संवत् 1230 का लेख भी है। इस विवरण से बगड़ावतों का समय 13वीं सदी विक्रम प्रमाणित होता है।

वास्तव में कुछ विशोष राजपरिवारों से सम्बद्ध होने से 'पृथ्वीराज रासो' को महत्त्व मिल गया किन्तु उसके समान

महत्त्व के काव्यों 'पाबूजी रा पवाड़ा', 'मिहालदे पुत्तान' और 'बगड़ावत' आदि का हमारे साहित्यिक इतिहास-लेखकों ने कहीं उल्लेख तक नहीं किया। इसका मुख्य कारण इनका अब तक अप्रकाशित रहना और सम्बद्ध इतिहासकारों का अनदेखी ही है। आशा है कि शीघ्र ही राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर द्वारा श्रद्धेय मुनि श्री जिनविजयजी, पुरातत्त्वाचार्य के मार्गदर्शन में ऐसे काव्यों के पूर्ण सङ्कलन, सम्पादन और प्रकाशन का परम महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान प्रारंभ किया जावेगा। प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक ने कई वर्ष पूर्व 'बगड़ावत' काव्य का संक्षिप्त रूप एकत्र किया था जिसके कुछ अंश श्रीयुत अगरचन्दजी नाहटा ने अपने एक निबन्ध में प्रकाशित भी किये है। पुस्तक के परिशिष्ट से वार्ता सम्बन्धी बगड़ावत के कुछ विशेष अंशों को साहित्य-संसार में सर्वप्रथम प्रकाशित किया जा रहा है।

बगड़ावत काव्य कर्ता 'छोछू' विशेष समर्थ कवि ज्ञात होता है इसीलिये इसकी तुलना महा-कवि चन्द से की जाती है-

'ओछू ने छोछू मिल्यो पृथ्वीराज ने चन्द।'

छोछू जाति से भट्ट अर्थात् भाट था जैसा कि बगड़ावतों की निम्न पंक्तियों से ज्ञात होता है-

'चांद सूरज तो तपै, मोर करे विलाप। हजूर ने बिढ़दावे छोछू भाट। छोछू भाट उदलजीरी वरदावली करै।।'

ओछू या उदलजी संभवतः बगड़ावतों में प्रधान भोजा का पुत्र उदयराज है।

महाकवि चन्द, नरहरि महापात्र और संभवतः सूरसागर के कर्ता सूरदास (सूरजचन्द) जैसे प्रसिद्ध कवि भी भाट ही थे। राजस्थान में 15वीं शताब्दी तक इन कवियों का विशेष मान था। तत्पश्चात् इनका प्रभाव कम हो गया जिसका मुख्य कारण इनका राजस्थानी काव्य शैली डिंगलको छोड़ पिंगलकी और झुकाव ज्ञात होता है। आज भी राजस्थान में कई जातियों के भाट काव्य-रचना की परम्परा अपनाये हुए हैं।

श्रीयुत अगरचंदजी नाहटा ने अपने निबन्ध में बगड़ावत काव्य का कर्ता 'छोछू' के स्थान पर 'चोचू' लिखा है। 'चोचू' नाम वास्तव में शुद्ध नहीं है क्योंकि बगड़ावत काव्य में, जैसा कि उक्त उद्धृत अंशों से प्रकट है 'छोछू' नाम ही मिलता है। यह भूल थी हरप्रसार शास्त्री की उक्त अंग्रेजी टिप्पणी में दिये गये नाम का हिन्दी रूपान्तरण करते समय 'सीएच' अंग्रेजी के 'च' और 'छ' के पाठ का अन्तर नहीं करने के कारण हुई प्रतीत होती है।

देवजी बगड़ावत सम्बन्धी वार्ता की प्रतिलिपि हमें श्रीयुत अगरचन्द जी नाहटा के सौजन्य द्वारा अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर से प्राप्त हुई है। प्रस्तुत कृति उक्त ग्रन्थालय के 'कैटलॉग ऑफ दी राजस्थानी मेन्युस्क्रिप्ट्स' में पृष्ठ सं. 101 पर 'बात' विषय के...

1. मरूभारती (बिरला ट्रस्ट, राजस्थानी शोध-विभाग, पिलानी) वर्ष-5, अंक-2

2. " " "

प्रेषक : बद्रीलाल सांगावत (भीलवाड़ा)
रामावतार राव, जयपुर

लोक साहित्य के शैक्षिक निहितार्थ : बगड़ावत लोककथा के विशेष संदर्भ में

लोक कथा आम लोगों के बीच प्रचलित ऐसी कहानी व कथाएं हैं जो मौखिक है और पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रही है। लोककथाएं सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखती हैं। साथ ही लोक कथाओं में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का विकास होता है। लोककथा किसी क्षेत्र विशेष या व्यक्ति विशेष की पहचान का निर्माण करती है। ये हमारी लोक संस्कृति का संचार व संरक्षण करती है। ये लिखित कम मौखिक ज्यादा है। राजस्थान प्रदेश के हर हिस्से में वहां की अपनी कोई लोक कथा है। जिनमें धार्मिक, प्रेम पर आधारित लोक कथाएं, मनोरंजक, उपदेशात्मक लोक कथाएं जैसी दंत कथाएं, किंवन्दतियाँ आज भी जनमानस के कंठ में रची बसी है।

इन्हीं लोक कथाओं में विष्णु के अवतार माने गए भगवान श्री देवनारायण जी की लोक कथा है। बगड़ावत महागाथा के नाम से प्रचलित यह लोक कथा 24 बगड़ावत भाइयों की दानवीरता, पशु प्रेम, प्रकृति प्रेम, साहस, बहादुरी, निर्भरता एवं युद्ध कौशल जैसी शिक्षा प्रदान करने वाली एक अमूल्य धरोहर के रूप में जानी जाती है। इस कथा के अनुसार बगड़ावतों को भगवान शिव के वरदान से 12 वर्ष तक की काया (शरीर) और माया (धन) मिला था। जिसे बगड़ावतों ने सामाजिक सरोकार, जनकल्याण एवं जरूरतमंद लोगों की मदद में खर्च किया। उनकी दानवीरता की मिसाल आज भी कायम है। बाद में दुर्गा भवानी का स्वरूप मानी जाने वाली

रानी जैमती का विवाह बगड़ावतों के सबसे बड़े भाई सवाई भोज से हुआ जो राण के राजा से युद्ध करने का कारण बना। इस युद्ध में सभी बगड़ावत भाई वीरगति को प्राप्त हुए। सवाई भोज की पत्नी साडू माता की गोद में श्री देवनारायण का अवतार हुआ। देवनारायण का बचपन उनके ननिहाल में गाय चराते हुए बीता। बाद में देवनारायण ने राण के राजा से अपने पूर्वजों का बदला लिया एवं अनेक जनकल्याण, गौ सेवा, दीनदुखी लोगों की सेवा जैसे कार्य किया।

यह लोककथा जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक व नैतिक पक्ष को न केवल प्रभावित करती है बल्कि इन सब की गहरी शिक्षा भी प्रदान करती है।

इस कथा के शैक्षिक निहितार्थ हमें कई बातों की शिक्षा देते हैं। देवनारायण का गायों की प्रति प्रेम हमें पशु प्रेम की शिक्षा देता है। हरे पेड़ों को न काटना तथा पेड़ों की पूजा करना हमें प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण एवं पर्यावरण जागरूकता की शिक्षा देता है। जो आज के समय की महत्ती आवश्यकता है। लोक कथाओं में नैतिक शिक्षा सर्वाधिक मिलती है। देवनारायण जी के द्वारा छोछू भाट की मदद करना, रानी पीपलदे की कुरूपता को ठीक करना, बीला के चर्म रोग को मिटाना आदि ऐसे कार्य हैं जो जरूरतमंदों की मदद करने की शिक्षा प्रदान करते हैं। श्री देवनारायण और बगड़ावतों की कथा युद्ध कौशल एवं बहादुरी की भी शिक्षा देती हैं। बगड़ावतो की इस लोक कथा में अनेक स्थान पर अलग-अलग शिक्षा प्रदान करने वाले प्रसंग आए हैं। इन प्रसंगों में जीवन मूल्य, मानवता, जीव दया जैसी शिक्षा मिलती है।

राजस्थान प्रदेश में अनेक लोक कथाएं प्रचलित है जिनमें रामदेव जी, गोगाजी, तेजाजी, ढोल मारू, मूमल की कथाएं, पंचतंत्र, हितोपदेश की कथा आदि कथाएं प्रचलित है। इन लोक कथाओं में जीवन के विभिन्न पक्षों को प्रभावित करने वाली शिक्षा मिलती है। ये लोककथाएं हमारी सांस्कृतिक विरासत है जो हमारी पहचान को संजोए हुए हैं।

- मेवा राम गुर्जर (व्याख्याता) चन्दवाजी, जयपुर

नोट : बगड़ावत श्री देवनारायण महागाथा (रानी लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत) बगड़ावत भारत वार्ता (जोशी पुस्तक भण्डार अजमेर) बगड़ावत श्री देवनारायण शौर्यगाथा, छीतरलाल कसाना एवं अन्य बगड़ावत भारत वार्ता से सम्बन्धित लोक साहित्य सम्बन्धी पुस्तकों का अध्ययन करने तथा उपर्युक्त विवरण से लगता है सभी पुस्तकों में प्रतिस्पर्धी कथन मौजूद हैं। खेड़ा चौसला के भोपा किशनलाल बारवाल, स्व. महन्त पीरूराम, अन्य बगड़ावत भारतवार्ता गायकों से परस्पर चर्चा में जो विभिन्न तथ्य और तर्क एवं मालवांचल में बोली जाने वाली बगड़ावत भारतवार्ता में विरोधाभासी अंश है। इन सभी के सम्बन्ध में व्यक्तिगत रूप से चर्चा एवं अध्ययन करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि इस पर एक व्यापक शोध कार्य प्रारम्भ करने की आवश्यकता है। गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान की मान्यता है कि इस सम्बन्ध में एक सेमीनार आयोजित करके तथ्यपूर्ण ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक सामग्री का संकलन करके गाथा के लौकिक-अलौकिक वैज्ञानिक अध्ययनयुक्त सामग्री संकलित करके प्रकाशित की जाये।

- मोहन लाल वर्मा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान

समाजसेवी गोपाल सिंह गुर्जर को जन्मदिन पर हार्दिक बधाई

राजस्थान में बड़ली गांव के मूल निवासी लक्ष्मीनारायण दादा के पुत्र गोपाल सिंह गुर्जर वर्तमान में इन्दौर में अपने पिता श्री लक्ष्मीनारायण दादा के पदचिह्नों पर चलते हुए अपने परिवार सहित समाजसेवा कार्य के लिये अपनी पहचान बनाये हुए है।

इन्दौर स्थित श्री देवनारायण मंदिर धार्मिक पारमार्थिक ट्रस्ट गुर्जर समाज के अध्यक्ष, अखिल भारतीय गुर्जर महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, हंसमुख मिलनसार व्यक्तित्व के धनी समाजसेवी, यारों के यार, सबको साथ लेकर चलने वाले भगवान श्री महाकाल, भगवान श्री देवनारायण के परम भक्त गोपालसिंह गुर्जर को राजस्थान गुर्जर महासभा एवं देव चेतना पत्रिका परिवार की ओर से जन्मदिन पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। भगवान श्री देवनारायण की कृपा आप के परिवार पर सदैव बनी रहे।

दिव्य नारायण ज्योति परम धाम गति प्रदाता

श्री देवनारायण धर्म ध्वज पदयात्रा महिमा

श्री देवनारायण ध्वज पदयात्रा में आने से पूर्व पदयात्री के लिए मंदिर में श्री देवनारायण ध्वजारोपण संकल्प व्रत के समान है। ब्रह्म संकल्प दिव्य ज्योतिर्मयी देव धाम पदयात्रा भगवत दर्शन की अद्भुत महिमा लोक प्रतिष्ठित है। श्री देवनारायण ध्वज पदयात्री के जन्म जन्मांतर के पापों को हर लेने वाली श्री देवनारायण ध्वजारोपण यात्रा कहीं गई है।

पुण्य स्वरूप तथा भगवान आदि देव नारायण की प्रसन्नता

का उपक्रम यह पदयात्रा है। जो भी कोई श्री देवनारायण मंदिर में पदयात्रा ध्वज की पूजा अर्चना करने का उत्तम कार्य करता है वह ब्रह्मा आदि देवताओं की कृपा का पात्र होता है। बहुत अधिक कहने से क्या लाभ, जो कोई पद यात्रा में सम्मिलित होता है, उसके पूरे कुटुंब को इसका पुण्य लाभ प्राप्त होता है।

परम उत्तम गंगा स्नान और शिवलिंग पूजन कर्म ही ध्वजारोपण की समानता कर सकते हैं। यह पदयात्रा सम्मिलन कर्म अद्भुत, अपूर्व और आश्चर्यजनक है। यह सब पापों को दूर करने वाला है। श्री देवनारायण ध्वज पद यात्रा में सम्मिलित होने वाला व्यक्ति पवित्र स्नान करके यात्रा में सम्मिलित होकर ध्वज को प्रणाम निवेदन करें। भगवान आदि देव नारायण ध्वज पदयात्रा के ध्वज वस्त्र में सूर्य, गरुड़ और चंद्रमा की पूजा भावना करें। ध्वज के दंड में धाता और विधाता के प्रतिष्ठित होने की धारणा करें। हल्दी, गंध और पुष्पों से ध्वज पूजन करके अक्षत अर्पित करें।

श्री देवनारायणाय नमः मंत्र का जाप करें। पदयात्रा काल में नित्य प्रातः ध्वज का वंदन करते हुए धारणा करें। पुंडरीकाक्ष! कमलनयन! आपको नमस्कार है! विश्व भावन! आपको नमस्कार है! हृषिकेश! सब के पूर्वज आपको नमस्कार है। जिनसे यह संपूर्ण जगत उत्पन्न हुआ है, जिनमें यह सब प्रतिष्ठित और प्रलय काल आने पर जिनमें ही इसका लय होगा,, उन भगवान आदि देव नारायण कि मैं शरण लेता हूं। ब्रह्मा आदि देवता भी जिनके परम भाव यथार्थ स्वरूप को नहीं जानते और योगी भी जिन्हें नहीं देख पाते, उन्हीं ज्ञान स्वरूप भगवान आदि देवनारायण कि मैं वंदना करता हूँ। अंतरिक्ष जिनकी नाभि है, द्यु लोक जिनका मस्तक है और पृथ्वी जिनका चरण है, उन विश्वरूप भगवान को मैं प्रणाम करता हूं। संपूर्ण दिशाएं जिनके कान हैं, सूर्य और चंद्र जिनके नेत्र हैं, तथा ऋक्, साम और यजुर्वेद जिन से प्रकाशित हुए हैं, परब्रह्म ज्योतिर्मय नारायण स्वरूप को मैं नमस्कार करता हूं। अपने श्रेष्ठ भक्तों पर जिनकी सदा कृपा प्रवाहित होती रहती है तथा जो भक्ति, पूजा, उपासना से ही सुलभ होते हैं, उन नारायण ज्योति स्वरूप 11कला अवतार भगवान श्री देवनारायण को मैं प्रणाम करता हूं।

पृथ्वी आदि पांच महाभूत, तन्मात्राएं, इंद्रियां तथा सूक्ष्म और स्थूल सभी पदार्थ जिनसे अस्तित्व लाभ करते हैं, सब और मुख वाले उन सर्वव्यापी परमेश्वर को मैं नमस्कार करता हूं। जिन्हें संपूर्ण लोकों में उत्तम से उत्तम निर्गुण, अत्यंत सूक्ष्म, परम प्रकाश मय, परब्रह्म कहा गया है, उन आदि देवनारायण को मैं बारंबार प्रणाम करता हूं।

योगेश्वर गण जिन्हें निर्विकार ,शुद्ध शब्द और भाव वाले तथा ईश्वर मानते हैं, जो समस्त कारण तत्वों के भी कारण है

जो भगवान संपूर्ण प्राणियों के अंतर्यामी आत्मा हैं, यह जगत जिन का स्वरूप है तथा जो निर्गुण परमात्मा हुए है,भगवान आदि देवनारायण मुझ पर प्रसन्न हो। जो माया से मोहित चित्त वाले अज्ञानी पुरुषों के लिए हृदय में रहकर भी उनसे दूर बने हुए हैं और ज्ञानियों के लिए जो सर्वत्र प्राप्त हुए भगवान आदि देवनारायण मुझ पर प्रसन्न हो। जगत का कल्याण करने के लिए परब्रह्म परमेश्वर आदि देव नारायण ने कमल पुष्प अवतार धारण किया है, विद्वान लोग जिनकी पूजा करते हैं, यह भगवान आदि देवनारायण मुझ पर प्रसन्न हो। ज्ञानी महात्मा जिन्हें सच्चिदानंद स्वरूप निर्गुण तथा गुणों के अधिष्ठान मानते हैं वह भगवान आदि देव नारायण मुझ पर प्रसन्न हो।

श्री देवनारायण ध्वज पदयात्रा के ध्वज की पताका जितने क्षणों तक वायु से फहराती रहती है, आरोपण करने वाले मनुष्य की उतनी ही पाप राशियां निसंदेह नष्ट हो जाती है। महा पापी से महा पापी दुष्ट पुरुष भी भगवान आदि देव नारायण मंदिर में ध्वजा चढ़ाकर सब पापों से मुक्त हो जाता है। जो धार्मिक पुरुष श्री देवनारायण पदयात्रा ध्वजों को देखकर उनका अभिनंदन करते हैं, वे सभी अनेकों पापों से मुक्त हो जाते हैं।

श्री देवनारायण ध्वज पदयात्रा में सम्मिलित होने का अवसर सौभाग्यशाली भक्तों को ही प्राप्त होता है।

गुर्जर लोक संस्कृति में प्रतिष्ठित भादवीं छठ पूजा महोत्सव श्री देवनारायण के माघ मास शुक्ल पक्ष सप्तमी तिथि कमल पुष्प अवतार से पूर्व उनके अश्व लीलागर के पृथ्वी पर अवतार की स्मृति में आयोजित होता है। जिसका तात्पर्य सूर्योदय से पूर्व उनके रथ में जुते सप्त रश्मि रुप अश्व लीलागर का सूर्य रश्मि प्रभा द्वारा पृथ्वी स्पर्श अग्नि संस्पर्श अग्नि स्वरूप है।

भगवान श्री देवनारायण लीलांगर घोड़े के 1114वें प्राकट्य महोत्सव के अवसर पर श्रद्धा और आस्था का उमड़ा सैलाब

देशभर में भगवान श्री देवनारायण धर्म ध्वज यात्राएँ दिल्ली, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश से देवधाम जोधपुरिया, सवाईभोज, मालासेरी एवं देवमाली के लिये रवाना हुई। प्रदेश की सड़कों पर जहाँ देखो वहीं श्री देवनारायण पदयात्रा में उमड़े श्रद्धालु अपने हाथों में भगवान श्री देवनारायण का पचरंग ध्वज लिये देवका जयकारा लगाते हुए नजर आये। जयपुर में भगवान श्री देवनारायण धर्म ध्वज पदयात्रा की भव्य झाँकी में हजारों की संख्या में यात्री नजर आ रहे थे। यात्रा गोनेर, चाकसू, निवाई, बनस्थली होते हुए देवधाम जोधपुरिया पहुँचकर सम्पन्न हुई। लोकश्रुति परम्परा के अनुसार राजस्थान प्रदेश के टोंक जिले में देवधाम जोधपुरिया में भाद्रपद मास की छठ एवं माघ मास के शुक्ल पक्ष के सप्तमी को श्रद्धा आस्था और चमत्कार का ऐतिहासिक संगम शताब्दियों से चला आ रहा है। देशभर से भगवान श्री देवनारायण के आराधक अपने श्रद्धासुमन अपने आराध्य के चरणों में अर्पित करने के लिये एकत्रित आते हैं। देवधाम जोधपुरिया मात्र एक मन्दिर नहीं आस्था, संस्कृति और आध्यात्म का केन्द्र माना जाता है। भगवान श्री देवनारायण के चमत्कार से प्रेरित होकर सन् 1715 में यहाँ अखण्ड ज्योति की प्रतिष्ठा हुई जो अनवरत प्रज्ज्वलित रहती है। इस ज्योति की सेवा का कार्य परम्परागत रूप से रग्गल गोत्र के गुर्जर भोपाओं द्वारा किया जाता रहा है।

देवधाम जोधपुरिया निरन्तर आध्यात्मिक महत्व के आस्था और पर्यटन के केन्द्र रूप में विकसित हो रहा है। यहाँ आयोजित होने वाले पर्वों पर यात्रियों की सेवा के साथ-साथ लोक

संस्कृति सम्बन्धी विविध आयोजन होते रहते हैं। हर वर्ष लाखों की संख्या में श्रद्धालु पदयात्री भादवीं छठ के ऊपर देवधाम जोधपुरिया के दर्शनार्थ देश के कोने-कोने से पहुँचते हैं। इस वर्ष लगभग 15 लाख श्रद्धालुओं ने भगवान श्री देवनारायण के श्री चरणों में अपना प्रणाम निवेदन किया। श्रद्धालु भक्तों ने लाखों श्रद्धालुओं को भण्डारे के माध्यम से देव प्रसादी का भोग सामूहिक रूप से करवाया। लोक कलाकारों ने अपने कला से अद्‌भुत सांस्कृतिक रसरंग भरी प्रस्तुतियाँ देकर भक्तों में आस्था के भावों को जागृत करने के साथ-साथ भगवान श्री देवनारायण के लीला चरित्र को व्याख्यायित भी किया।

भादवीं छठ के मेले के अवसर पर गुर्जर समाज की आस्था, शिक्षा और सांस्कृतिक शक्ति का अद्‌भुत संगम जोधपुरिया में नजर आया। सैंकड़ों किलोमीटर की श्री देवनारायण धर्म ध्वज पदयात्राओं में यात्रियों का अनुशासन देखते ही बन पड़ता है। सम्पूर्ण मार्ग में देवनारायण के भक्तों द्वारा पदयात्रियों के लिये अल्पाहार भोजन प्रसादी एवं विश्राम की व्यवस्था सामाजिक स्तर पर देखते ही बन पड़ती है। मेला आयोजन समिति द्वारा प्रतिभाओं व भामाशाहों का हर वर्ष सम्मान किया जाता है। सप्ताहभर मन्दिर प्रांगण में गुर्जर लोक संस्कृति का अद्‌भुत नजारा नजर आता है। श्री देवनारायण धर्म ध्वज पदयात्रा समाज के लिये प्रेरणा एवं पथ प्रदर्शन का कार्य करती प्रतीत हो रही है। इस वर्ष देशभर में सभी देवनारायण मन्दिरों में भगवान श्री देवनारायण के लीलांगर घोड़े के 1114वें प्राकट्य महोत्सव पर विशेष धार्मिक आयोजन सम्पन्न हुए। भगवान श्री देवनारायण के अवतार स्थली मालासेरी डूंगरी, ताम्बेसर की बावड़ी, बगड़ावत युद्धस्थल पर निर्मित सवाईभोज मन्दिर, देवमाली, पालना जी का देवरा (भीलवाड़ा), धनवाड़ा, श्री देवनारायण मन्दिर झालावाड़, गोठ दड़ावत, वरनागर धाम, आसीन्द, देवका हरवाड़ा (चन्दवाजी), समरा का देवरा (प्रतापगढ़) अलवर में भी भव्य मेलों का आयोजन सम्पन्न हुआ।

गृहराज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म के जन्मदिन पर बधाई देने वालों का ताँता

जयपुर। राजस्थान के गृहराज्यमंत्री जवाहर सिंह बेढ़म ने इस वर्ष अपना जन्मदिन क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के आग्रह पर

भरतपुर जिले में मनाया। जयपुर में उनके निवास पर प्रात: से ही बधाई देने वालों का ताँता लगा रहा। गृह राज्यमंत्री सर्वप्रथम मोतीडूँगरी गणेश मंदिर के दर्शन कर अपने जन्मदिन के कार्यक्रमों की शुरुआत की।

राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष मोहन लाल वर्मा, अखण्ड भारत गुर्जर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. देवनारायण गुर्जर,

जयपुर शहर जिलाध्यक्ष सरदार सिंह चेची, मेटल्स एण्ड इलेक्ट्रीकल्स मजदूर संघ (बीएमएस) के अध्यक्ष गोविन्द सहाय पारीक ने उनके निवास स्थान पर पहुँचकर जन्मदिन की हार्दिक बधाई देते हुए साफा बंधवाकर व पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका मुँह मीठा करवाया।

इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के दूर दराज से आये हुए कार्यकर्ताओं ने भी गृह राज्यमंत्री को बधाईयाँ प्रेषित की। सायंकाल भरतपुर में आयोजित कार्यक्रम में पहुँचकर गृह राज्यमंत्री ने हजारों की संख्या में उपस्थित कार्यकर्ताओं की बधाईयाँ स्वीकार की।

ऐतिहासिक महापुरुषों के सम्बन्ध में भारतवर्ष का इतिहास जातीय साम्प्रदायिक धार्मिक वैमनस्य उत्पन्न करने का नहीं

वरन् 'शोधपूर्ण लेखन' का विषय है

✍ डॉ. मोहन लाल वर्मा

इतिहास लेखन शोधकर्ताओं के लिए शोध का विषय है। कुछ समय से समाचार पत्रों में गुर्जर प्रतिहार सम्राट मिहिर भोज, पृथ्वीराज चौहान और अनंगपाल तोमर की प्रतिमाएं लगाई जाने पर कतिपय लोगों द्वारा गुर्जर और राजपूतों में वैमनस्य उत्पन्न करने के घृणित प्रयास किये जा रहे हैं।

यह कारगुजारी तुच्छ राजनीतिक स्वार्थ से प्रेरित लोगों द्वारा की जा रही है।

ऐतिहासिक दृष्टि से अखंड भारतवर्ष के इतिहास के पन्नों में गुर्जर राज्यवंशों के प्रमाण दर्ज हैं। इसके एक नहीं हजारों साक्ष्य है। सनातन हिंदू धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए गुर्जर सम्राटों के नेतृत्व में 350 वर्ष तक अरब आक्रांताओं से लोहा लिया गया है। राजपूत और गुर्जर दोनों में से कोई भी इतिहास को झुठला नहीं सकता है, भ्रांतियां उत्पन्न करने का कुत्सित प्रयास कर सकता है। यह प्रयास आज से नहीं सैकड़ों वर्ष से हिंदुओं को जातियों में बांटने का चल रहा है। गुर्जर और राजपूत दोनों को ही समझना चाहिए कि उनके पूर्वजों ने देश धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए अपना लहू बहाया है।

आज भारत देश धर्म और संस्कृति पर जिस प्रकार के प्रहार किये जा रहे हैं। हमें यह समझना चाहिए कि जिस प्रकार से एक बीज वृक्ष की अनेक शाखाएं होती है और उन पर फल लगते हैं। उन फलों में कोई भेद नहीं होता है। इसी प्रकार से क्षत्रिय वर्ण से विस्तार क्रम में जिन-जिन जातियों मे प्रतिहार, चौहान और तोमर गोत्र हैं। कालांतर में उन सभी के पूर्वज मिहिर भोज, पृथ्वीराज चौहान और अनंगपाल तोमर रहे हैं। भारतीय वर्ण व्यवस्था के जाति व्यवस्था में रूपांतरण का वैज्ञानिक एवं शास्त्र सम्मत पुनरावलोकन करने से यह सभी तथ्य प्रमाणित होते हैं। यह दृष्टिगत रखते हुएं हमें हिंदू धर्म देश और संस्कृति को विभाजित करने वाली प्रत्येक कार्रवाई को हतोत्साहित करना चाहिए। अखंड भारत वर्ष में गुर्जर मुसलमान और कायम ख्यानी राजपूत मुसलमान भी प्रतिहार, चौहान और तोमर वंश के हैं उनके पूर्वज भी गुर्जर प्रतिहार सम्राट मिहिर भोज, पृथ्वीराज चौहान और अनंग पाल तोमर हैं, इस ऐतिहासिक सत्य से इनकार नहीं किया जा सकता है।

अंतरंग साक्षी चैतन्य-गुर्जर देव मंदिर दर्शन

अखंड भारत राष्ट्र के उत्तराखंड राज्य में ऐतिहासिक मध्य युग में अल्मोड़ा के द्वारहाट अंचल में निर्मित गुर्जर देव मंदिर के खंडहरों को देखकर स्मृति में आया अर्थात 'जाति स्मर हुआ'। हमारे दिव्यांश पूर्वज जिनके हम अंश वंश हैं। हमारे पूर्वजों का दिव्य संकल्प गुर्जर देश के ऐतिहासिक मध्य युग में जिसको अखंड भारत राष्ट्र के इतिहास में अरब यात्रियों ने अपने यात्रा वृतांत में उल्लेखित किया है।

अखंड सांस्कृतिक हिंदू राष्ट्र निर्माता पूर्वज जिन्होंने अखंड भारत राष्ट्र सनातन शाश्वत धर्म संस्कृति का विस्तार किया। उनके संरक्षण में वर्तमान समय में उपलब्ध वेद विज्ञान, धर्म शास्त्र पुराण, जैन बौद्ध संप्रदाय धर्म ग्रंथों का प्रणयन तथा लिपि बद्ध करने का कार्य संपन्न हुआ।

अखंड भारत राष्ट्र में तत्कालीन गांधार, मुल्तान, पेशावर, जम्मू-कश्मीर, मथुरा, कन्नोज, अयोध्या में भगवान श्रीराम मंदिर तथा अनेक, सूर्य,ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शिव शक्ति, दुर्गा, नृसिंह आदि वराह अवतारों के विशाल मंदिर बनवाए। तक्षशिला और नालंदा जैसे विद्या प्राप्ति के प्रतिष्ठानों को संरक्षण दिया। सनातन शाश्वत धर्म के अंग स्वरुप कश्मीर क्षेत्र में बौद्ध

संप्रदाय धर्म संगत का आयोजन किया।

गुर्जर पूर्वजों के वंशधरों ने गुर्जर देश के केंद्र अबुर्दाचंल में सम्मत 968 में गुर्जर चौहान वंश में अवतरित श्री देवनारायण फड़ लोकवार्ता एवं पाट ज्योति स्वरूप 'ईंटो में श्याम' दर्शन

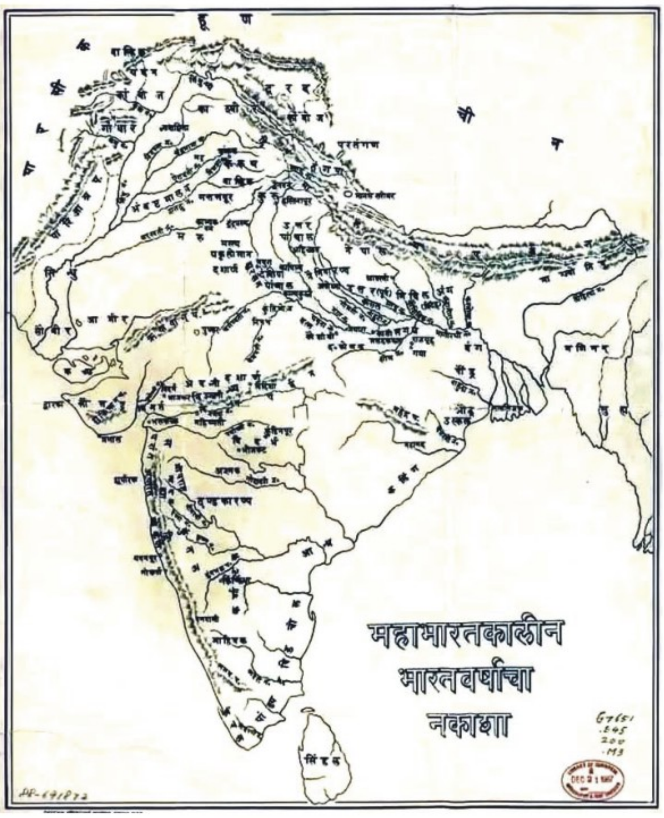

का संदेश स्वयं श्री देवनारायण ने मानव कल्याण एवं गुर्जर वंश उद्धार हेतु विरासत रुप, कुल भाट छोछू के अंत:करण के माध्यम से स्वयं गुर्जर आदि तीर्थ नाग पहाड़ पुष्कर धाम पर, ईंट पाट ज्योति स्वरूप आध्या प्रकृति साक्षी ईटों में श्याम दर्शन अर्थात जन्मना जाति सगुण निर्गुण सर्वव्यापी संबंध प्राप्ति का उपदेश दिया वह लोक में श्री देवनारायण लोकवार्ता रूप प्रतिष्ठित है।

वर्तमान में भारतवर्ष के सम्पूर्ण इतिहास के पुनरावलोकन एवं पुर्नलेखन की आवश्यकता है। खुला विश्वविद्यालय के 12वीं क्लास के पाठ्यक्रम की पुस्तक में भारतवर्ष के इतिहास की दृष्टि से गुप्तकाल का तीसरी सदी का नक्शा मुद्रित किया गया है। जिसमें बाईं तरफ के क्षेत्र के लिये गुर्जर लिखा है संभवतया यह प्राचीन एवं मध्यकालीन गुर्जर देश, गुर्जरात्रा, गुजरात, वर्तमान राजस्थान, अहीछत्रपुर, अबुर्दगिरिक्षेत्र, सिन्ध, पंजाब, जम्मू-कश्मीर, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, मध्यप्रदेश, मालवा, महाराष्ट्र और बंगाल के कुछ क्षेत्र शामिल थे। उपरोक्त उल्लेखित पुस्तक की लेखिका अंजली मलिक सहायक प्रोफेसर कालिन्दी कॉलेज दिल्ली है। इतिहास में उल्लेखित शक कुषाण एवं हूण गुप्त काल की तीसरी चौथी शताब्दी के समकालीन हैं। इस दृष्टि से स्वतंत्रता पश्चात् एवं ब्रिटिश काल में इतिहास के नाम पर छपी पुस्तकों में गुर्जरों के सम्बन्ध में उल्लेखित विवरणों पर शोध एवं पुर्नलेखन आवश्यक है। फर्रूखाबाद गजेटियर में उल्लेख है इस जिले में एक गुर्जर पुर गाँव है। नागभट्ट-द्वितीय से प्रतिहार राजाओं की उत्पत्ति हुई जिनका वंश गुर्जर था। नागभट्ट का पोता राजा मिहिरभोज 840 में हो गया था। इस समय कन्नौज बड़े राज्य का मध्यस्थल माना जाता था। उक्त शिलालेख से प्रमाणित होता है उनके राज्य में सौराष्ट्र, अवध जिसे आज अयोध्या, ग्वालियर और करनाल शामिल थे।

(फर्रुखाबाद गजेटियर)

फर्रुखाबाद। ९७

युद्ध ने राज्य किया। इस इन्द्रयुद्ध को बंगाल के राजा धर्मपाल ने सन ८०० ई० में राज्यच्युत कर दिया। कुछ काल पीछे गुजरात के राजा नागभट्ट द्वितीय ने हमला किया और ले लिया। इसी नागभट्ट से कन्नौज के परिहार राजाओं की उत्पत्ति हुई है, जिनका वंश गुर्जर था यह प्रमाणित हो गया है। नागभट्ट का पोता राजा मिहिर या भोज प्रथम सन् ८४० से ८९० में हो गया है। इस समय कन्नौज बड़े राज्य का मध्य स्थल माना जाता था। शिला लेखों से प्रमाणित है कि इसके राज्य में सौराष्ट्र, अवध, ग्वालियर, और कर्नाल शामिल थे। उसका पुत्र महेन्द्रपाल हुआ, तथा पोता भोज द्वितीय हुआ। फिर राजा महीपाल ने सन ९५० में राज्य किया। अंतिम राजा-देवपाल सन् ९५४ में हुआ जो कालंजर के चंदेल राजाओं के आधीन हो गया, प्राचीन सिक्के सिंह भवानी और कुतलूपुर में मिले हैं। राजगिर मकरंद नगर, मखदूम जहनिया का टीला, रंगमहल और बालापीर के स्थानों में भी बहुत से पदार्थ मिले हैं।

जर्नल रायल एसियाटिक सोसायटी सन १९०९ से कन्नौज के सम्बन्ध में यह मालूम हुआ कि गुर्जर राजाओं का वर्णन शाका ५५६ या सन ई० ६३४-६३५ के उस शिला लेख में है जो बम्बई प्रांत के कालदगी जिले में ऐहोली के मेघुती मंदिर में

सोमनाथ मन्दिर के लिये गुर्जरों के योगदान का भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान है जिसे अक्सर इतिहासकारों द्वारा नजरअंदाज किया जाता रहा है। सोमनाथ मंदिर के ऐतिहासिक महत्व की दृष्टि से गुजरात के सौराष्ट्र में स्थित यह मन्दिर शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में प्रथम माना जाता है। यह मन्दिर भारतीय संस्कृति की आस्था और आत्म सम्मान का प्रतीक है। गुर्जर प्रतिहार साम्राज्यकाल 8वीं से 12वीं सदी तक में अरब आक्रमणकारियों को भारत में आगे बढ़ने से रोकने वालों में उल्लेखनीय स्थान है। गुर्जर प्रतिहार सम्राट नागभट्ट प्रथम लगभग 730 ई. में अरबों को राजस्थान अथवा गुर्जर देश की सीमाओं पर पराजित किया। जिससे सोमनाथ सहित कई मन्दिर सुरक्षित रहे। नागभट्ट का यह प्रतिरूप सोमनाथ की रक्षा के लिये एक मजबूत दीवार बना। गुर्जर साम्राज्य काल में राजाओं एवं उनके सामन्तों ने मन्दिरों के निर्माण एवं संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई इसके सैंकड़ों ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध हैं।

अरब और तुर्क आक्रमणों के बावजूद सोमनाथ मन्दिर का बार-बार जीर्णोद्धार हुआ। इसमें गुर्जर योद्धाओं और शासकों की शक्ति का बड़ा योगदान रहा है। उनका यह बलिदान सोमनाथ मन्दिर के लिये मात्र भौतिक रक्षा नहीं बल्कि आस्था और भारतीय संस्कृति की रक्षा का प्रतीक है।

गुर्जर सम्राट मिहिरभोज के सम्बन्ध में उपलब्ध ऐतिहासिक साक्ष्य एवं तथ्यों का अध्ययन

संकलनकर्त्ता : नन्दलाल गुर्जर

आबू पर्वत के यज्ञ की वास्तविकता यह है कि जब सिंध विजय के पश्चात अरबों के हौसले बहुत बढ़ गए और गुर्जर राज्यों पर धावे बोलने लगे तथा लूट खसोट के साथ-साथ हिंदुओं की धार्मिक स्थलों को भी नष्ट करने लगे तब गुर्जरों के नेतृत्व में सब लोग संगठित हुए तथा आबू पर्वत पर यज्ञ करके देश और धर्म की सुरक्षा करने के लिए संकल्प लिया। मोहम्मद बिन कासिम के जाने के पश्चात अरब सेनापति जुनैद ने सिंध से लगे गुर्जर देश पर भयंकर आक्रमण कर दिया जल थल मार्गों से। वे समस्त भारत पर अधिकार करने के उद्देश्य से गुर्जरों के भीनमाल, भडौच, देव पाटन सोमनाथ तथा वल्लभी आदि नगरों को ध्वस्त करके और हजारों लोगों की हत्या करके वहां भी बलपूर्वक इस्लाम धर्म का प्रचार करने लगे तब गुर्जर जाति का एक महासम्मेलन आबू पर्वत के अचलगढ़ नामक स्थान पर अरब आक्रान्ताओं से निपटने के लिए हुआ उसमें देवल, कराची से भाग कर आए हुए मेधातिथि ब्राह्मण ने गुर्जरों को उसे यज्ञ के द्वारा देश धर्म की रक्षा करने के लिए प्रेरित किया।

उस यज्ञ में गुर्जर जाति के प्रतिहार, परमार, चौलुक्य सोलंकी तथा चौहान वंशों के चुनिंदा योद्धा संकल्प लेने के लिए हवन कुंड के पास शपथ लेने वालों में अग्रणी थे, यद्यपि गुर्जर जाति के अन्य वंशों के लोग भी उपस्थित थे। उस समय ब्राह्मण वर्ग ने देश धर्म की रक्षा करने की क्षमता केवल गुर्जरों में देखी थी और उन्हें एकमात्र रक्षक के रूप में स्वीकार किया।

– रतनलाल वर्मा, भारतीय संस्कृति के रक्षक,
पृष्ठ संख्या 19 – 24

भड़ौच के गुर्जर घराने की सबसे महत्वपूर्ण एवं आकर्षक ऐतिहासिक घटना अरब के मुसलमान ताजिक लोगों के साथ वर्षों तक चलने वाला सामुद्रिक एवं स्थल युद्ध है, जिसमें अरबों से इनकी बराबर मुठभेड़ हुई और अरबों को बार बार मुंह की खानी पड़ी। सन 712 ईसवी में सिंध पर अरबों ने बड़े प्रयत्नों के बाद विजय प्राप्त की और 738 ईस्वी में उन्होंने सिंध और नवसारी के सभी राज्यों पर विजय प्राप्त की किंतु उनका यह प्रयत्न सिंध से मिले हुए गुर्जर राज्य को विजय करने में असफल रहा, इसमें कुछ भी संदेह नहीं कि अरब के ताजिक लोग गुर्जर लोगों को नहीं मिटा सके।

– सी. वी. वेद्य, मेडिवल हिन्दू इंडिया,
पृष्ठ संख्या 252 – 253

गुर्जर प्रतिहार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण के वंशज है – The imperial Gurjaras were the Ikshvaku descended from Lakshmana, the son of Dasharatha.

- K. M. Munshi, Imperial Gurjars, P. 102

प्रतिहार वंश गुर्जरों की शाखा थी।

– डॉ. सत्यप्रकाश, भारत का इतिहास (राजपूत काल), पृष्ठ संख्या 41

The well known clan of pratihara rajputs is a branch of Gurjar or Gujar stock.

- V.A. Smith, E.H.I., P. 411

प्रतिहार गुर्जर है।

– आर.एस. त्रिपाठी, कनौज का इतिहास, पृष्ठ संख्या 221

अरब लेखक अबूजैद ने लिखा Kannauj a large country of Jurm.

- iliot and Downson, History of india part v, p.10 and 25 }

Bhoja ruled till the year A.D. } 90, a period of over half a century which full of turmoils, difficulties and conquests in all directions, finally culminating in the e&tension of the Gurjar Pratihar empire from west bengal to Kathiwar and from the punjab to the vindhyas.

- Dr. B.N. Puri, The History of the Gurjar Pratihar, p.96

सम्राट मिहिरभोज यह सम्राट गुर्जरों में ही नहीं, अपितु समस्त भारत और विश्व के इतिहास में भी एक महान शासक, सम्राट और अद्वितीय योद्धा गिना जाता था। यह गुर्जर जाति का सबसे शक्तिशाली और प्रभावशाली सम्राट हुआ है जिसने इस जाति के गौरव को देश देशांतर और द्वीप द्वीपान्तर अर्थात भारत के बाहर भी दूर देशों तक फैला दिया। गुर्जर जाति के इतिहास का यही स्वर्णयुग कहलाता है।

– आचार्य भगवानदेव (स्वामी ओमानन्द सरस्वती), हरयाणा के लक्षण स्थान (साभार– डॉ. दयाराम वर्मा, गुर्जर जाति का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृष्ठ 214)

जब महेन्द्रपाल पूर्व दिशा में अपना विजय अभियान चला रहा था, तब कश्मीर के शंकरवर्मन ने (जिसे कभी भोज ने पराजित कर अपना सामन्त बनाया था) गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य के सामन्त अलाखान को, जो पंजाब का नरेश था, पराजित कर उससे टक्क क्षेत्र वापिस ले लिया। परन्तु पूर्व दिशा के सफल सैन्य अभियान के पश्चात महेन्द्रपाल ने शंकरवर्मन से पुन: उक्त क्षेत्र को जीत लिया था गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य में मिला लिया।

– कल्हण, राजतरंगिणी (साभार – डॉ दयाराम वर्मा, गुर्जर जाति का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृष्ठ 215)

महिपाल का काल गुर्जर गौरव का चरम बिंदु माना जा सकता है। उसके समकालीनों ने उसे आर्यावर्त का चक्रवर्ती सम्राट बताया है अर्थात इस महाद्वीप का ऐसा सम्राट जिसे कोई चुनौती न दे सके।

–राणा अली हसन चौहान, गुर्जरों का संक्षिप्त इतिहास, पृष्ठ 65–66

गुर्जरों की ऐतिहासिक महानता स्वंय उनके शिलालेखों के आधार पर स्थापित हो गई है। यदि गुर्जर प्रतिहार सम्राट शक्तिशाली अरब आक्रांताओं को लगभग 250 वर्षों तक न रोकते तो प्राचीन भारतीय संस्कृति मिश्र तथा बेबीलोन की प्राचीन संस्कृतियों की भांति मिट जाती।

– डॉ. आर.के. सिन्हा व डॉ राय, भारत का इतिहास (साभार– डॉ. दयाराम वर्मा, गुर्जर जाति का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृष्ठ 227)

गुर्जर प्रतिहारों ने उस आपत्ति के समय देश का नेतृत्व सँभालकर अरब आक्रांताओं से धर्म व संस्कृति की जो रक्षा की उसके लिए वे राष्ट्र की ओर से धन्यवाद के पात्र हैं।

– के.एम. पन्निकर, भारत का इतिहास (साभार– डॉ दयाराम वर्मा, गुर्जर जाति का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृष्ठ 227)

अरबों के आक्रमणों के प्रसार को रोकने के लिए गुर्जर सेनाओं की अजेय दीवार खड़ी थी।

– डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार, भारतवर्ष का इतिहास

जो अरब योद्धा पश्चिम में उत्तरी अफ्रीका को विजय करते हुए सम्पूर्ण स्पेन (अफ्रीका) पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने में सफल हो गए थे और जिनके सम्मुख रोमन साम्राज्य और पर्शियन साम्राज्य सूखे वृक्षों के समान धराशायी हो गए थे वे भारत में सिंध से आगे न बढ़ सके, उसका प्रधान श्रेय गुर्जर प्रतिहारों को दिया जाना चाहिए। दसवीं सदी के अंत में जब तुर्कों के भारत पर आक्रमण प्रारंभ हुए, तब भी उत्तरी भारत की प्रधान राजशक्ति गुर्जर प्रतिहार ही थे।

– सत्यकेतु विद्यालंकार, भारतीय इतिहास पूर्व मध्य युग

आलोच्य काल में गुर्जर प्रतिहार वंश उत्तरी भारत की प्रधान राजशक्ति था और दसवीं शती के अंतिम चरण तक वे ही गुर्जर जाति के विभिन्न वंशों चौहान, चौलुक्य, परमार, चन्देल, तोमर, चाप, खटाना आदि के स्वामी थे।

– डॉ. दयाराम वर्मा, गुर्जर जाति का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृष्ठ 298

सिंध विजेता अरबों का सामना करने की सामर्थ्य केवल गुर्जर सम्राटों में थी। अन्य किसी भी जाति के राजाओं ने अरबों का प्रतिरोध करने का साहस नहीं किया।

– डॉ. दयाराम वर्मा, गुर्जर जाति का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृष्ठ 299

दो सौ वर्षों तक अरबों के सामने गुर्जर सेनाएं अजेय दीवार बनकर खड़ी रही।

– डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य का आदिकाल (साभार– डॉ. दयाराम वर्मा, गुर्जर जाति का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृष्ठ 299)

गुर्जर प्रतिहारों के वंशज आज प्रतिहार, पड़िहार (परिहार), राघव, घोड़ा रोक और घुरया है।

– चौधरी खुर्शीद भाटी, गुर्जरों का संपूर्ण इतिहास, पृष्ठ 244

प्रतिहार गुर्जर है।

– लाडली मोहन निगम, लेखक एवं पूर्व सांसद, गुज्जर स्वाभिमान, पृष्ठ V

प्रतिहार गुर्जर है।

– डॉ मस्तराम कपूर, पत्रकार लेखक तथा कवि, गुज्जर स्वाभिमान, पृष्ठ 4

मिहिरभोज प्रतिहार सम्राट की सेना गुर्जरों की सेना कही गई है। मिहिरभोज का पोता महिपाल दहाड़ने वाला गुर्जर कहा गया है। यशोवर्मन चंदेला महाराजा गुर्जरों के लिए झुलसने वाली अग्नि कहा गया है। यहां गुर्जरों से मतलब कनौज के प्रतिहार सम्राट देवपाल और उसकी सेना से है। राजौर अलवर का प्रतिहार राजा मथनदेव एक शिलालेख में अपने को गुर्जर प्रतिहारों का वंशज बताता है। एक स्थान पर चेदि का महाराज लिखता है, मेरे बाबा ने गुर्जरों को हराया, इसमे गुर्जरों के अर्थ कनौज के प्रतिहार सम्राट विजयपाल से है। अब यह नि:सन्देह रूप से सिद्ध हो चुका है कि मिहिरभोज उसके पूर्वज और वंशज गुर्जर जाति के प्रतिहार गौत्र के थे।

– डॉ पीएस वर्मा, गुज्जर स्वाभिमान, पृष्ठ 111

गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य ने सनातन भारतीय संस्कृति की पुनर्स्थापना की, गुर्जर प्रतिहार साम्राज्यकाल में सार्वजनिक निर्माण कार्य राज्यशिल्प मे केंद्रीय महत्व रखते थे।

– डॉ मान सिंह गुर्जर, राजस्थान प्रसाशनिक सेवा के अधिकारी

नागभट्ट द्वितीय एक वीर, साहसी, महत्वकांक्षी, पराक्रमी, कूटनीतिज्ञ, आत्मबल वाला, साहित्य प्रेमी व धार्मिक प्रवृत्ति वाला शासक था। विशाल गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य का संस्थापक था। गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य की राजधानी जालौर–अवन्ति को छोड़कर कनौज को राजधानी बनाने का श्रेय गुर्जर नरेश नागभट्ट द्वितीय को ही है। यह प्राचीन कान्य कुब्ज (कनौज) नगर गुर्जर साम्राज्य के पतन तक गुर्जर प्रतिहारों की राजधानी रहा, 805 ई से 1019 ई 200 वर्षों तक आर्यावर्त में गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य का संचालन, प्रशासन कनौज नगर से होता रहा।

–डॉ. के.आर. गुर्जर, गुर्जर क्षत्रिय उत्पत्ति एवं साम्राज्य, पृष्ठ 285

गुर्जर प्रतिहार राजवंश और उसके शासकों को उत्तरी भारत में राजनैतिक एकता अखंडता कायम रखने का श्रेय है। इतिहासकार बैजनाथ पूरी के अनुसार भोज के बारे में अबूजैद तथा अलमसुदी ने विवरण दिया है। कनौज के शासक वीर कहे गए हैं और भोज को वोज तथा गुर्जर को जुर्ज नाम से संबोधित किया गया है।

– डॉ. मोहनलाल वर्मा, वृहद कुणबे की सामाजिक यात्रा, पृष्ठ 166

अरब यात्री सुलेमान कहता है कि गुर्जर सम्राट मिहिरभोज इस्लाम व अरब का सबसे बड़ा शत्रु है। इतिहासकार रतनलाल वर्मा आदि अनेक विद्वान गुर्जर सम्राट मिहिरभोज के राज्य को गुप्त साम्राज्य, हर्षवर्धन, अशोक के साम्राज्य से भी बड़ा, सुसंगठित, सुदृढ़, शक्तिशाली और धनधान्य पूर्ण मानते है।

– प्रोफेसर सत्येन्द्रपाल आर्य, वृहद कुणबे की सामाजिक यात्रा, पृष्ठ 207

नागभट्ट द्वारा आरंभ किया गया प्रतिहार वंश संपूर्ण भारत में राज्य प्रणाली विकसित करने वाला राजवंश था जो सेना को नियमित वेतन देता था इस वंश ने कनौज के शासक को पराजित कर साम्राज्य स्थापित किया। इस वंश का मिहिरभोज, कनिष्क महान के पश्चात सर्वाधिक विख्यात गुर्जर सम्राट हुआ था।

– शैतान सिंह गुर्जर, वृहद कुणबे की सामाजिक यात्रा, पृष्ठ 247

महान गुर्जर सम्राट मिहिरभोज को सिंध, पंजाब, हिमाचल, गढ़वाल व नेपाल की तराई बिहार मगध तथा उत्तरी बंगाल आदि को गुर्जर साम्राज्य में मिलाकर व काबुल, गांधार, कश्मीर, नेपाल, आसाम के शासकों को अपने संरक्षित मित्र बना कर, काबुल से आसाम तक तथा हिमालय की चोटियों व तिब्बत की सीमा से नर्वदा पार तक व आंध्र तक शक्तिशाली महान गुर्जर साम्राज्य को संगठित करने में जो भारी सफलता मिली उसका एक कारण यह भी था कि नागभट्ट द्वितीय द्वारा ध्वस्त की गई दक्षिण के राष्ट्रकूटों की सैन्य शक्ति बहुत दिनों तक फिर संगठित न हो सकी थी और वे उत्तर भारत अर्थात गुर्जर साम्राज्य के निर्माण व संगठन में किसी प्रकार की बाधा डाल सकने की स्थिति में नहीं थे। मिहिरभोज महान विजेता

व निर्माता होने के अतिरिक्त महान राजनीतिज्ञ भी था।

– भाई तेलूराम, गुर्जर आज तक, पृष्ठ 69

भडौच पर सबसे पहला अरब आक्रमणकारियों का आक्रमण अरब के तीसरे खलीफा उस्मान के समय सन 636 ई में अरब की जल सेना द्वारा थाना के स्थान पर हुआ जो भडौच राज्य में था। भडौच के गुर्जर वीरों ने अरबों के यहां पैर नहीं जमने दिए और उन्हें पराजित करके वापिस खदेड़ दिया। काफी समय तक उनके भारत पर पुन: आक्रमण करने की हिम्मत ही नहीं हुई।

– प्रिंसिपल गणपति सिंह, गुर्जर वीर वीरांगनाएं, पृष्ठ 19

गुर्जर सम्राट मिहिरभोज के संबंध में अरब यात्री सुलेमान और मसूदी ने अपने यात्रा विवरण में लिखा है, गुर्जर सम्राट जिनका विरूद वराह है मुसलमानों का सबसे बड़ा शत्रु है। वह सिंध का भी सम्राट है। जिसको इसने अपने हिन्दू राज्य में मिला लिया है। इसकी सेना लगभग 90 लाख है। उसके राज्य में चोर डाकू का भय कतई नहीं है। उसकी राजधानी कनौज भारत का प्रमुख नगर है जिसमे 7 किले और 10 हजार मन्दिर है। गुर्जर सम्राट आदि वराह का (विष्णु) का अवतार माना जाता। यह इसलाम धर्म और अरबों का सबसे बड़ा शत्रु है।

– प्रिंसिपल गणपति सिंह, गुर्जर वीर वीरांगनाएं, पृष्ठ 26-27

प्रतिहार वंश के महाराजा मिहिरभोज की सेना का नाम भी गुर्जर सेना था। महाराजा मिहिरभोज के पुत्र महिपाल को गर्जने वाला गुर्जर कहा जाता था। अवलोकन करें इंडिया एंटी कुअरी भाग 2 पृष्ठ 181 तथा बम्बई गजेटियर भाग 1 पृष्ठ 128

– राणा अली हसन चौहान, तारीखे गुर्जर, पृष्ठ 290

महाराजा मिहिरभोज के पितामह राजा नागभट्ट ने अरबों को राष्ट्रकूट तथा सिंध से जब उसने बाहर निकाला तो गूजर भगवान कहा गया तथा उसको हिंदुओ ने अवतार माना। देखे गुजरात का अभिलेख, बम्बई गजेटियर तथा दी ग्लोरी दैट वाज गुर्जर देश (केएम मुंशी) पृष्ठ 9 – 17, प्रतिहार वंश का राजा मिहिरभोज गूजर था देखे अर्ली हिस्ट्री ऑफ इंडिया (वीए स्मिथ)।

– राणा अली हसन चौहान, तारीखे गुर्जर, पृष्ठ 290

कन्नड़ भाषा के प्रसिद्ध कवि पम्प ने अपनी पुस्तक विजय पम्प भारत मे महिपाल राजा प्रतिहार वंश को गूजर राजा लिखा है। इसी राजा को जर्नल ऑफ द रॉयल एशियाटिक सोसायटी 1909 ई भाग 6 पृष्ठ 88 पर गूजर स्वीकार किया गया है। महाराजा मिहिरभोज तथा उसके पूर्वज तथा उसकी सन्तान जो प्रतिहार वंश की थी गूजर जाति से संबन्ध रखते थे।

– राणा अली हसन चौहान, तारीखे गुर्जर, पृष्ठ 290

परमार, प्रतिहार, सोलंकी तथा चौहान वंश गूजर है। देखे इंडियन एंटीकुएरी भाग 13 पृष्ठ 416, राजौर, घटयाला तथा राष्ट्रकूट के अभिलेख तथा दोहद के अभिलेखों से मिस्टर भंडारकर ने यह निष्कर्ष निकाला कि प्रतिहार, परमार, सोलंकी तथा चौहान गूजर है। बम्बई एशियाटिक सोसायटी जर्नल 1905 ई अतिरिक्त अंक पृष्ठ 413, 433

– राणा अली हसन चौहान, तारीखे गुर्जर, पृष्ठ 291

प्रतिहार वंश गुर्जर है –

1. मथनदेव प्रतिहार का राजौर (अलवर) शिलालेख –

श्रीराज्यपुरावस्थितो महाराजधिराज परमेश्वर श्रीमथनदेवो महाराजाधिराज श्रीसावट सूनुग्गूर्जर प्रतिहारांवय ----- स्तथैवैतप्रत्यासन्न श्रीगुर्जरवाहित समस्तक्षेत्र समेतश्च। (एपिग्राफीका इंडिया भाग 3 पृष्ठ 266)

2. राष्ट्रकूट सम्राट दन्तिदुर्ग का सज्जन का ताम्रपत्र –

हिरण्यगर्भ राजन्यैरूज्जयन्यां यदासिलम। प्रतिहारीकृतं येन गुर्जरदेशादि-राजकम।। 9।। (सज्जन का ताम्रपत्र अभोधवर्ष शक संवत 793 एपिग्राफीका इंडिया भाग-18 पृष्ठ 243-257 का 9वां श्लोक)

3. राष्ट्रकूट कर्क का बड़ौदा ताम्रपत्र –

गौडेन्द्रवंगपति निर्ज्जयदुर्विदग्घसद-गुरजेश्वरदिदिगगर्गलतां च यस्य। नित्वा ×××××××× भुङ्क्ते। (इंडियन एन्टीक्वेरी 12 वीं जिल्द पृष्ठ 160)

4. महिपाल को गरजने वाला गुर्जर कहा गया है –

धारासारिणीसेन्द्र चापवलये यस्येत्थमब्दागमे, गर्जदगूर्जरसंगख्यतिकरं जिर्णो जन: शंसती। (बम्बई गजेटियर जिल्द 1 भाग 1 पृष्ठ 128 का नोट 4)

5. मिहिरभोज का शिलालेख जिसमें डेन्डवानक गांव का उल्लेख है –

गुर्जरात्रभूमौ डेन्डवानक विषयसम्व (म् ब) द्धिसिबाग्रामाग्रहोर (एपिग्राफीका इंडिका 5 पृष्ठ 211)

6. राजतरंगिणी 5 पृष्ठ 149 – 50 स्टीन का अनुवाद –

उच्चखानालखानस्य संख्ये गूर्जरभूभुज:।
बद्धमूलां क्षणाल्लक्ष्मीं शुचं दीर्घामरोपयत।।
तस्मै दत्वा टक्कदेशं विनयादंगलीमिव।

स्वशरीरमिवापासीन मण्डलं गूर्जराधिपः।। हृतँ भोजाधिराजेन स साम्राज्यमदापयत प्रतिहारतया भृत्यीभूते थक्कियकांवये।।

7. V.A. Smith (Early History of India P. 411) –

It is now definitely proved that Bhoja (840-90.ष्ठ.) his predcessors and successors belonged to the Pratihar (Parihar) clan of the Gurjar tribe consequently that the well known clan of Pratihar is a branch of Gurjar or Gujar stock.

8. Dr. B.N. Puri (The History of the Gurjar Pratihar P.19) –

The Pratihar family of Kanauj was Gurjara by e&traction This fact is not mentioned in their records, but in those of their contemporaries.

9. K.M. Munshi (Glory that was Gurjardesha P.12) –

The imperial Pratiharas, named by modern scholars Gurjar pratiharas, considered Gurjardesha as their home-land, and so came to be styled Gurjaras or gurjaras Varas.

10. अरब यात्री सुलेमान का भोज के विषय में कथन (Eliot and Downs on, History of India V.I P. 4) –

The king of Juzra (Jurz) maintains numerous forces and no other indian prince has so fine cavalory. He is unfriendly to the Arabs.... Among the princes of india there is no greater for of the Muhammadan faith than he.

11. अरबी लेखक अबूजैद के अनुसार गुर्जर साम्राज्य (Eliot and Downson History of India V.I P. 10) –

Kanauj, a large country, forming the empire of Jurz.

ऊपर के प्रमाणों से स्पष्ट हो जाता है कि गुर्जर प्रतिहार वंश गुर्जर जाति का प्रसिद्ध वंश है। प्रतिहारों को गुर्जर जाति का वंश सिद्ध करने वाले अनेक शिलालेख, ताम्रपत्र तथा दानपत्र प्राप्त है। गुर्जर प्रतिहार वंश गुर्जर जाति का वह वंश है जिसने आठवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के वर्षों में प्रसिद्धि प्राप्त की थी।

– डॉ दयाराम वर्मा, गुर्जर साम्राज्य, पृष्ठ 73-75

सम्राट मिहिरभोज 835-880 ई. – रामभद्र की मृत्यु के पश्चात उसका यशस्वी पुत्र 835 ई. में कनौज साम्राज्य का अधिपति बना। सम्राट कनिष्क के पश्चात सम्राट मिहिरभोज गुर्जर जाति का दूसरा सबसे बड़ा तथा परम् यशस्वी महान सम्राट था। वह अपने समय का अद्वितीय सम्राट था। उसने न केवल पालों तथा राष्ट्रकूटों के राजाओं को छकाया अपितु अरब आक्रांताओं को भी सदैव भयभीत रखा जिससे वे कभी सिंध से आगे बढ़ने का साहस न कर सके। मिहिर, प्रभास, भोज तथा आदिवराह उसकी उपाधियां थी, जो उसके शौर्य, वैभव तथा महानता को दर्शाती हैं।

– डॉ दयाराम वर्मा, गुर्जर साम्राज्य, पृष्ठ 80

आठवीं से 12 वीं शताब्दी तक वर्तमान राजस्थान में प्रतिहार गुर्जर शक्तिशाली शासक के रूप में रहे थे। स्कंद पुराण, वंश स्तिलक चम्पू तथा कुवलयमाला में प्रतिहारों को गुर्जर कहकर भी सम्बोधित किया है। इनकी राजधानी जालौर जिले के भीनमाल में थी। इनके अधिकार क्षेत्र में न केवल राजस्थान का अधिकांश भूभाग था बल्कि गुजरात, मध्यप्रदेश, मध्य भारत एवं उनसे लगा कर बिहार तक फैला हुआ था। प्रतिहार शासकों के समकालीन शिलालेखों तथा ताम्रपत्रों अथवा ग्रन्थों में गुर्जरों के ही सम्बोधन के संकेत मिलते हैं। तत्कालीन मंदिरों की स्थापत्य शैली भाषा आदि भी प्रतिहार गुर्जर कौम की ही प्राप्त होती हैं। प्रतिहारों की लगभग 28 शाखाएं है, जिनमें से दो शाखाएं मंडोर शाखा व भीनमाल शाखाएं राजस्थान में विद्यमान हैं। प्रतिहारों ने मंडोर को राजधानी बनाया था।

– दुर्गाप्रसाद माथुर, गुर्जर जाति का संक्षिप्त इतिहास, पृष्ठ 35

ठाकुर यशपालसिंह जो वरिष्ठ सांसद और राजपूत जाति के थे उन्होंने यतीन्द्र कुमार वर्मा के ग्रन्थ गुर्जर इतिहास की भूमिका में लिखा है– प्राचीन समय से पश्चिम भारत में गुर्जरों का राज्य था। मध्यकाल में कुछ गुर्जर परिवार राजपूत कहलाने लगे।

– यशवंत सिंह मंडलोई, गुर्जर और राजपूतों का गौरवशाली प्राचीन इतिहास, पृष्ठ 109

महान गुर्जर जाति के अनेक राजवंशों ने जिनमें चाप, चावड़ा, मैत्रिक, पंवार, परमार, पुंडीर, चालुक्य, चौहान, तंवर, गहलोत आदि प्रमुख थे, अपने शक्तिशाली गुर्जर प्रतिहार सम्राटों के नेतृत्व में देश तथा धर्म की रक्षा अनेक बाह्य आक्रमणकारियों से की, जिनमें अरब आक्रमणकारी मुख्य थे। भारतीय इतिहास में यह युग चिरस्मरणीय रहेगा।

– पी. एन. ठाकुर, गुर्जर वीर गाथा, पृष्ठ 7

प्राचीन काल में अपने अन्य भारतीय भाई बहनों की तरह गुर्जरों ने भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में

अनुपम योगदान किया है। गुर्जरों के पूर्वजों ने प्राचीन भारत में तीन साम्राज्यों का निर्माण किया – कुषाण साम्राज्य तथा गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य। भारतीय राष्ट्रीय संवत– शक संवत के प्रवर्तक सम्राट कनिष्क (78–101ई.), शिवभक्त सम्राट मिहिरकुल हूण (502–542ई.) तथा आदि वराह सम्राट मिहिरभोज (836–885ई.) क्रमश: इनके प्रतिनिधि आइकॉन है।

– डॉ सुशील भाटी, गुर्जर वीर गाथा, पृष्ठ 11

गुर्जर वंश के राजनैतिक इतिहास पर दृष्टि डालने पर ज्ञात होता है कि नागभट्ट प्रथम (730 – 756ई.) गुर्जर प्रतिहार वंश का संस्थापक शासक था। इसने सिंध के प्रसिद्ध एवं शक्तिशाली म्लेच्छ शासकों की विशाल सेना को नष्ट करके अरबों के आक्रमण की धार को कुंद करते हुए पश्चिमी भारत की रक्षा ही नहीं कि वरन अरबों के द्वारा रौंदे हुए राज्यों को जीत कर वहां की जनता में स्वाभिमान का भाव जागृत कर दिया था। – होराम सिंह आर्य, गुर्जर गौत्र गवेषणा

महान गुर्जर सम्राट मिहिरभोज (836 से 888 ई. तक)

– रामभद्र का उत्तराधिकारी उसका पुत्र मिहिरभोज बना। वह न केवल गुर्जर सम्राटों में सबसे महान था, अपितु उपलब्धियों व चरित्र की दृष्टि से इतिहास में किसी भी सम्राट से कम न था। इतिहास में वह अनेक नामों से जाना जाता है जैसे भोज देव, प्रभास, आदिवराह, मिहिर तथा भोज। अरब लोग उसे बौजाह (भोज) कहते थे। – राणा अली हसन चौहान,

गुर्जरों का संक्षिप्त इतिहास, पृष्ठ 62

राजतरंगिणी – इस पुस्तक के लेखक पंडित कल्हण है, जो कश्मीरी भाषा में लिखी है। इस महान पुस्तक में चक्रवर्ती सम्राट मिहिरभोज तथा अन्य गुर्जर शासकों का वर्णन बड़े रोचक व सुंदर ढंग से दिया है।

– डॉ मंजू सिंह, ऐतिहासिक कालक्रम में गुर्जर, पृष्ठ 42 (महर्षि दयानंद सरस्वती विश्विद्यालय, अजमेर द्वारा प्रकाशित इतिहास शोध पुस्तक)

नागभट्ट गुर्जर प्रतिहार को सबने अपना सम्राट घोषित करके 724 ई में अरबों के अपूर्व भयंकर आक्रमण का डटकर मुकाबला किया और उसमें वे विजयी हुए। गुर्जर प्रतिहार वंश ने लगभग 300 वर्ष तक राज्य किया और अरब आक्रांताओं को उनके घर में घुसेड़ दिया। नागभट्ट प्रतिहार गुर्जर सम्राट ने उज्जैन को अपनी राजधानी बनाया। पुष्कर (अजमेर) तीर्थराज का संस्थापक नागभट्ट प्रथम ही था। उसने चेची गौत्र के गुर्जर को वहां का महंत व प्रबन्धक नियुक्त किया था। गुर्जर प्रतिहार सम्राटों में मिहिरभोज महान 835 – 890 ई. विशेष उल्लेखनीय हैं। उसने अपनी राजधानी कन्नौज को बनाया। उसने सामन्त (जागीरदार) प्रथा को समाप्त किया। स्थायी सेना को खड़ी किया। अपने पूर्वजों की भांति सेना को नकद वेतन दिया जाता था। बंधुआ सेना की प्रथा समाप्त की। मिहिरभोज जो कि गुर्जर सम्राटों में सबसे महान था, उसको विश्व के इतिहास में किसी भी सम्राट से व्यक्तिगत, चरित्र तथा राजनैतिक उपलब्धियों व सफलताओं आदि में किसी भी प्रकार दूसरे दर्जे का नहीं कहा जा सकता।

– प्रिंसीपल गणपति सिंह, कश्मीर के शहीद देशभक्त गुर्जर गुर्जरियां, पृष्ठ 4–5

राजोरगढ़ अभिलेख में गुर्जर प्रतिहारवंश का उल्लेख हुआ है। विक्रम संवत 979 वैशाख बदी 13, 922–23 ईसवी, ईपीग्राफिया इंडिका, भाग 111, पृष्ठ 266

कवि पम्पा ने महिपाल को गुर्जर राजा कहा है। (देखें– आरएस त्रिपाठी, प्राचीन भारत का इतिहास, 1942, पृष्ठ 319, दिल्ली)

– डॉ पी. डी. गुर्जर (विभागाध्यक्ष इतिहास),
गुर्जर मातृभूमि के प्रति समर्पित, पृष्ठ 63

गुर्जर प्रतिहार सम्राटों ने अरब आक्रांताओं को बार बार पीटकर भगाया। सम्राट नागभट्ट प्रथम जो प्रतिहारों के सर्वश्रेष्ठ सम्राट माने जाते है, उन्होंने 720 ई से 760 ई तक खलीफा की सेनाओं को हराकर खदेड़ दिया।

– प्रोफेसर सत्येंद्र पाल आर्य,
गुर्जर मातृभूमि के प्रति समर्पित, पृष्ठ 104

अपने अभिलेखों में गुर्जर प्रतिहार रामायण के प्रसिद्ध सूर्यवंशीय क्षत्रिय लक्ष्मण के वंशज होने का दावा करते हैं।

गुर्जर साम्राज्यकालीन ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व के स्मारकों का अवलोकन

जयपुर। गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मोहनलाल वर्मा, मंत्री राजेंद्र सराधना एवं पुरातत्त्व विभाग भारत सरकार के वरिष्ठ अधिकारी वीरेंद्र चंदिला

ने भादवीं छठ श्री देवनारायण के लीलागर घोड़े के 1114 वें प्राकट्य महोत्सव के अवसर पर राजस्थान में अजमेर, ब्यावर, भीलवाड़ा व जोधपुर जिले में धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व के स्थलों का अवलोकन किया।

सर्वप्रथम भीलवाड़ा जिले में गुलाबपुरा स्थित खेड़ा चौसला श्री देवनारायण मंदिर में भोपा किशन लाल बारवाल एवं पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष धनराज गुर्जर के साथ बगड़ावत भारत लोकवार्ता एवं खेड़ा चौसला के धार्मिक ऐतिहासिक महत्व पर चर्चा हुई।

खेड़ा चौसला गुर्जर समाज की श्रद्धा और आस्था का स्थल है। जहां पर अपने ननिहाल मालवा से भगवान श्री देवनारायण के लौटने पर उनका राजतिलक अजगर के सिंहासन पर हुआ था। अपने कुल भाट छोछू के माध्यम से देवनारायण ने अपने बिछड़े हुए भाइयों को यहीं एकत्रित किया था और अपने पूर्वजों का बैर लेकर उनकी धन संपदा को वापस प्राप्त किया था।

देवमाली भगवान श्री देवनारायण का भव्य प्रथम मंदिर है जहां भगवान श्री देवनारायण ने अपने पुत्र बीला और पुत्री बीली को अपनी पूजा उपासना प्रविधि से अवगत करवाया था। इस स्थल पर श्री देवनारायण के आगमन पर पहाड़ियों ने भी झुककर उनको नमन किया था। इस स्थल पर भव्य तीन दिवसीय मेला लगा हुआ था, जिसमें दूर-दराज से गुर्जर समुदाय के लोग व भगवान श्री देवनारायण के उपासक पद यात्राएं लेकर पहुंच रहे थे। सतरंगी गुर्जर लोक संस्कृति साकार हो रही थी।

तांबेश्वर की बावड़ी वह ऐतिहासिक जगह है जहां साडू

माता पानी लेने गई थी, और जैमती ने अपनी पायल इस बावड़ी में फेंकी थी जिसको सवाईभोज ने अपने भाले की नोंक से बाहर निकाला था। यह स्थल भी गुर्जर समाज की श्रद्धा और आस्था का स्थल है।

मालासेरी डूंगरी भगवान श्री देवनारायण की अवतार स्थली राजस्थान भर के लोगों की श्रद्धा और आस्था का स्थल है। यहां भी भादवीं छठ पर विशाल मेले का आयोजन संपन्न हुआ। गुर्जर लोक संस्कृति से संबंधित विविध कार्यक्रमों का भव्य

आयोजन हुआ।

आसींद में स्थित सवाईभोज अंतरराष्ट्रीय गुर्जरों की

श्रद्धा और आस्था के स्थल पर हजारों श्रद्धालु पूजा अर्चना के लिए पहुंच रहे थे। विभिन्न अंचलों से श्रद्धालुजन महन्त सुरेश दास जी से आशीर्वाद प्राप्त कर धार्मिक चर्चा कर रहे थे। राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेश अध्यक्ष पूर्व मंत्री कालूलाल गुर्जर ने भी मालासेरी एवं सवाईभोज मंदिर में दर्शन करके कार्यक्रमों की तैयारी के संबंध में जायजा लिया।

करेड़ा के उप प्रधान सुखलाल गुर्जर द्वारा यहां पर एकदिवसीय भंडारे का आयोजन किया गया। वहीं भण्डारे में श्रद्धालुओं ने भगवान श्री देवनारायण की प्रसादी ग्रहण की।

राजस्थान सरकार द्वारा सवाईभोज मालासेरी गोठ दढांवट एवं वरनागर धाम के लिए कॉरिडोर बनाया जा रहा है।

करेड़ा उपप्रधान सुखलाल गुर्जर ने बताया कि राज्य सरकार को ऐतिहासिक भोजा पायरा के प्राचीन आस्था स्थल को भी कॉरिडोर में सम्मिलित करना चाहिए यह क्षेत्रीय लोगों का आग्रह है।

ब्यावर जिले में नीमाज से 2 किलोमीटर दूर करंडी माता का ऐतिहासिक मंदिर खंडहर रूप में

स्थित है। यह ऐतिहासिक मंदिर गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य कालीन है, जिसे पुरातत्व विभाग राजस्थान द्वारा ऐतिहासिक स्मारक घोषित किया गया है।

जोधपुर में बिलाड़ा से 6 किलोमीटर दूर हर्षा देवल नामक स्थान पर बगड़ावत कालीन हर्षा देवल शिव मंदिर खण्डहर अवस्था में है। इसके संबंध में कहा जाता है बगड़ावतों द्वारा इस मंदिर का निर्माण करवाया गया है, यहां बगड़ावतों की बैठक भी थी, बगड़ावतों ने यहाँ पर घोड़ों के गले में अशरफियाँ बांधकर दौड़ाएं थे, वह अशरफिया आज भी लोगों को जमीन में दबी हुई कहीं-कहीं मिलती है। यह मंदिर भी राजस्थान सरकार पुरातत्व विभाग द्वारा ऐतिहासिक स्मारक घोषित किया गया है। इसके समीप ही खण्डहर अवस्था में बगड़ावतों द्वारा बनवाई गई एक बावड़ी भी है। इन सभी गुर्जर साम्राज्यकालीन पुरातात्विक ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व के स्थलों के संबंध में तथ्य और तर्कपूर्ण जानकारी का संग्रह करके इन धरोहरों को देश के जन समाज के समक्ष लाने की आवश्यकता है। यह सभी गुर्जर साम्राज्यकालीन इतिहास की कड़ियां है।

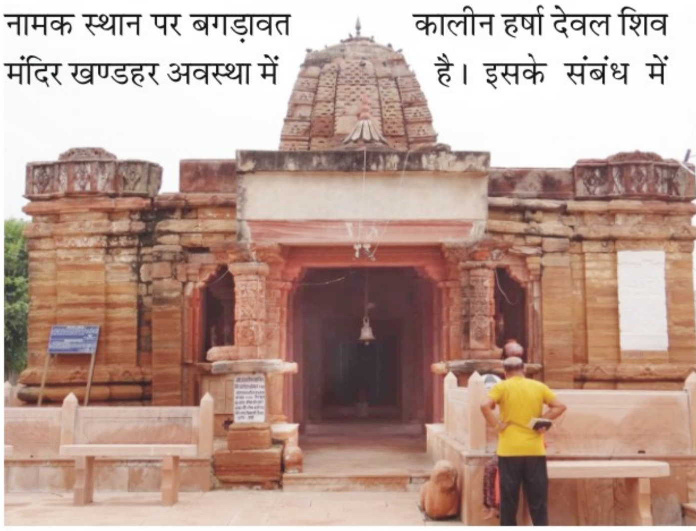

स्त्री-पुरुष देह अन्तरंग नर-नारी प्रज्ञा प्रेम जीवन कला

✍ डॉ. मोहन लाल वर्मा

स्त्री-पुरुष दांपत्य जीवन निष्ठा युक्त जीवन चर्या, उनके मनो लैंगिक अंर्तद्वन्द्व की गाथा है। उनके यह अंर्तद्वन्द्व बड़े मर्म भेदी रहते हैं, यौवन काल में ही उनमें दृष्टि विषयक संवेदनाएं, देह रूप-रंग-आकार से युक्त चेतना संस्पर्श उन्हें इस प्रकार आकर्षित करते है कि उनके जीवन के बाकी अनुभवों से कोई समानता नहीं पाई जाती है।

स्त्री-पुरुष परस्पर अंतरंग क्षणों की आनंद विह्वलता की ललक में जब संसार के सब रस रंगों का अस्तित्व आंखों द्वारा ही उनके मानस नेत्र गोचर प्रिय लगता है। उसके अतिरिक्त अन्य किसी चीज का उन्हें ज्ञान नहीं रहता है। जैसे-जैसे उनकी आयु बढ़ती है, दृश्य रंग रूप उनके नेत्रों के द्वारा अंतरंग अवर्णीय आनंद, लवलीन करने वाली चाक्षुष कल्पनाओं का मोहक सौंदर्य और आश्चर्य, उनके जीवन को ललित कलाओं के प्रति प्रेम में परिणत हो जाता है। उनके अंतर्मन अंतरंग ज्वार बनकर उठता है, जो उन्हें बार-बार सब रसरंग संसार की तरफ खींचता है और उन्हें कहीं अपने अंतरंग लालित्य के अतिरिक्त शांति नहीं मिलती है, जब तक उन्हें अपने अंतरंग तृप्ति न मिल जाए।

नर- नारी प्रेरक शक्ति सब रस रंग संसार मानव मन में

सौंदर्य निष्ठा प्रेरित ललित कलाओं के सृजन में नारी का उतना अपना नहीं है-नारी की देन बहुत अव्यक्त और सूक्ष्म है।

स्त्री-पुरुष दांपत्य जीवन में वास्तव में उनका अपना वही है जो उन पर बाहर से लादा हुआ नहीं हो। जो जबरदस्ती आरोपित किया गया है, आत्मा में पूरी तरह आत्मसात नहीं हुआ, वह किसी का अपना कैसे हो जाएगा। स्त्री-पुरुष जीवन यात्रा में महत्वपूर्ण स्व: अनुभूति भी है। यथार्थ में नारी क्या अपने सृष्टि सर्जन का शोर करके दिखाई पड़ने वाले कृतित्व से अधिक कुछ नहीं देती ? दृश्य सब रसरंग रूप संसार मानव जीवन कला, सभ्यता और संस्कृति तथा साहित्य के क्षेत्र में नारी जो सहज प्रस्तुत करती है, जिसमें न कला का दंभ है और न अपने दाय भाग का किसी प्रकार का अहं है, जो है वही उसके लिए स्वाभाविक है। सांसारिक जीवन में नारी का जातीय तत्व तो बहुत मौन है, जिसे कोई संज्ञा व्यक्त नहीं कर सकती। नर -नारी प्रेरक शक्ति द्वारा सब रस रंग संसार गतिशील है। यह जिस सभ्यता और संस्कृति में स्वीकार कर लिया गया है, वही सभ्यता और संस्कृति अपने मानव जीवन को दिव्य पूर्णत्व की ओर गति प्रदान करने में सक्षम हो सकी है।

नारी मुक्ति की रचयिता राजकुमारी यशोधरा

इस संसार में नारी के इतिहास का सही पन्ना पलट के देखें तो सबसे पहले राजकुमारी यशोधरा का चित्र सामने आ जाता हैं। क्योंकि उनके जीवन का संग्राम ही अनोखा था। नारी के जीवन के जो विविध पहलू हैं जैसे कि माता पिता की एक अच्छी बेटी होना, विवाह के बाद एक अच्छी बहू होना, एक धर्मनिष्ठ पतिव्रता, धर्मपत्नी बनना, एक कारुणिक संवेदनशील माता होना आदि सब नारी की भूमिकाओं के सभी पहलू हमें राजकुमारी यशोधरा के चरित्र मे दिखाई देते हैं और इन सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण उन्होंने जो अनोखा इतिहास रचा वह 'राजकुमार बोधिसत्व सिद्धार्थ के महाभिनिष्क्रण के बाद का है।'

उस समय उनकी उम्र सिर्फ 29 साल की थी। वह एक तरुण थी, एक सुंदर नारी थी। अपने पति के गृहत्याग के बाद सुख की चाहत में वह चाहे तो कुछ भी कर सकती थी, जैसे की, दूसरा विवाह या फिर अपने मायके भी चली जाती। क्यूंकि वह एक राजकुमारी थी और राजकुमारी होने के नाते उनके पास पैसा, धन इन सबकी कोई कमी नहीं थी। लेकिन, उन्होने ऐसा कुछ नहीं किया। पति के जाने के बाद उन्होंने अपने पुत्र राहुल और सास ससुर, परिवार सबको संभालकर महल में रहकर भी अपने पति के कदमों के पीछे चलती रही, उनके मार्ग का अनुगमन करती रही। और ये सब उनके भीतर का पतिप्रेम और एकनिष्ठता का प्रतीक था। क्यूंकि माता रमाई को बाबासाहेब फिर से घर में लौट आयेंगे ये कम से कम आस तो थी लेकिन, राजकुमारी यशोधरा को पति दोबारा लौट आयेंगे इसकी कोई उम्मीद तक बची नहीं थी। फिर भी उन्होंने सबको संभाला। कुछ लोगों को ऐसा लगता हैं कि पैसा, धन आदि ये सब होने से सबकुछ ठीकठाक होता है। पर ऐसा नहीं है। पैसा, धन ये सब इन्सान को सिर्फ जीवनयापन करने के लिये मददगार बन सकते हैं लेकिन इससे जीवन का सही उद्देश कभी हासिल नहीं होता और अगर ऐसा होता तो राजकुमार बोधिसत्व सिद्धार्थ के पास ये सबकुछ था लेकिन, फिर भी उन्होंने गृहत्याग किया। उन्हें ये सब करने की क्या जरुरत थी ? इसका अर्थ यही है कि पैसा, धन ये इन्सान की जीने की जरुरतें पूरी करते हैं, लेकिन इससे जीवन का सही उद्देश्य हासिल नहीं होता इसलिये, वे रोकने से भी नहीं रुके।

राजकुमारी यशोधरा ने भी वही किया। महल में रहने के बावजूद भी उन्होंने एक गृहत्यागयुक्त जीवन को अपनाकर नारी के इतिहास को एक नया आदर्श, एक नया आयाम दिया की, जिनके कारण, आज इस संसार की हर नारी एक स्वतंत्रपूर्ण जीवन जीकर अपने मुक्ति का मार्ग भी स्वयं चुन सकती हैं और निर्वाण तक हासिल कर सकती हैं। सही मायने में बुद्धासासन मे भिक्खुणी होने का सबसे पहला स्थान राजकुमारी यशोधरा को ही जाता हैं लेकिन, बड़ों का आदर सत्कार, सम्मान करना चाहिए, इस पवित्रता के कायम रखने के खातिर महाप्रज्ञामती गौतमी को भिक्खुणी संघ का उत्तरदायित्व दिया गया। चाहे कुछ भी हो मगर इस पूरे संसार में मुक्ति के मार्ग पर चलने वाली इन सास और बहू ने भी नारी के पूरे इतिहास को एक ऐसा बेमिसाल बना दिया कि जिनके आदर्श और ऋण को इस संसार की कोई भी नारी कभी भुला नहीं सकती।

(नारी एक चिंतन : पू. भिक्खुणी बुद्धकन्या, थेरी, कारंजा लाड, महाराष्ट्र)

भादवीं छठ पर रतनपुर (नीमच) में भव्य शोभायात्रा एवं पालना जी का देवरा भीलवाड़ा में भव्य मेला सम्पन्न

भीलवाड़ा। भगवान श्री देवनारायण की भादवीं छठ के अवसर पर राजस्थान गुर्जर महासभा प्रदेश महामंत्री छीतर लाल कषाणा, झालावाड़ जिलाध्यक्ष सूरतराम गुर्जर, प्रदेश संगठन मंत्री बजरंग गुर्जर, बारां जिलाध्यक्ष हरिप्रकाश भड़ाना तथा हाड़ौती संभाग के कार्यकर्ताओं ने प्रदेश अध्यक्ष कालूलाल गुर्जर को भादवीं छठ की बधाई प्रेषित की वहीं कालूलाल गुर्जर ने हाड़ौती से आये हुए सभी कार्यकर्ताओं का भीलवाड़ा स्थित अपने निवास पर स्वागत-सत्कार किया।

श्री देवनारायण मन्दिर पालना जी विकास समिति द्वारा भादवीं छठ पर भगवान श्री देवनारायण के घोड़े लीलांगर के 1114वें प्राकट्य महोत्सव के अवसर पर एक भव्य मेले का आयोजन किया गया। मेले में हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने पहुँचकर बगड़ावत भारत लोकवार्ता में उल्लेखित ऐतिहासिक धार्मिक महत्व के पालना जी स्थित श्री देवनारायण मन्दिर के दर्शन किये।

इस अवसर पर आयोजित जनसभा को सम्बोधित करते हुए राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व मंत्री कालूलाल गुर्जर ने कहा कि सामाजिक उत्थान के लिए शिक्षा और संस्कार महत्वपूर्ण है। सामाजिक स्तर पर इस सम्बन्ध में व्यवस्था करने के साथ-साथ प्रतिभाओं को तराशने का कार्य भी करना चाहिये जिससे वे शासन

प्रशासन के पदों पर पहुँचने के योग्य बन सके। समाज के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान के लिए जहाँ विद्यार्थियों के लिए तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता है वहीं परम्परागत व्यवसायों को भी आधुनिक तकनीक से प्रोन्नत करने की जरूरत है।

इस अवसर पर पूर्व विधायक धीरज गुर्जर, माण्डल विधायक

उदयलाल भड़ाना, रामप्रसाद गुर्जर, रामस्वरूप गुर्जर व महासभा के पदाधिकारियों ने सम्बोधित करते हुए सामाजिक एकता पर बल दिया। यह भी सम्बोधन में उभरकर आया कि हमें श्रद्धा और आस्था के स्थलों के साथ-साथ आध्यात्मिक क्षेत्र में भी संस्कार दिये जाने के लिये कार्यक्रम चलाने चाहिये। मेला स्थल पर गुर्जर लोक संस्कृति साकार हो रही थी।

मध्यप्रदेश के नीमच स्थित श्री देवनारायण मन्दिर में जनसभा से पूर्व नगर में भगवान श्री देवनारायण की भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व मंत्री कालूलाल गुर्जर के रतनपुर पहुंचने से पहले मार्ग में भारतीय जनता पार्टी एवं गुर्जर समाज के लोगों ने स्थान-स्थान पर कालूलाल गुर्जर का स्वागत सत्कार किया। शोभायात्रा में भव्य झाँकियाँ सजाई गई थी। नगर पालिका परिसर में भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ताओं एवं नगरपालिका के अध्यक्ष द्वारा पूर्व मंत्री कालूलाल गुर्जर का अभिनन्दन किया गया।

आयोजित जनसभा को सम्बोधित करते हुए पूर्व मंत्री कालूलाल गुर्जर ने भगवान श्री देवनारायण के लीला चरित्र पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वर्तमान समय में देश में जो हालात चल रहे हैं उनको देखते हुए हमें भगवान श्री देवनारायण द्वारा सामाजिक समरसता के दिये गये सन्देश को जन-जन तक पहुँचाने की आवश्यकता है। जिस प्रकार भगवान श्री देवनारायण ने अपने बिछड़े हुए भाईयों को एकत्रित किया था उसी प्रकार हमें भी सामाजिक स्तर पर कालान्तर में हमसे अलग हुए सामाजिक घटकों को एकमंच पर लाकर संगठित करने की आवश्यकता है।

सभा को कृषि उपज मण्डी के अध्यक्ष उमराव सिंह गुर्जर, श्यामलाल गुर्जर एडवोकेट एवं जनप्रतिनिधियों ने सम्बोधित करते हुए समाज की एकता पर बल दिया।

आशापुरा मानव कल्याण ट्रस्ट इकाई राजसमंद द्वारा आयोजित एकदिवसीय

प्रकृति पर्यावरण चेतना एवं मेवाड़ के इतिहास में राष्ट्रधर्मी माता पन्नाधाय की भूमिका विषय पर संगोष्ठी सम्पन्न

परिवार में आयोजित मांगलिक कार्य के अवसर पर पौधारोपण करने का संकल्प लिया

राजसमंद। आशापुरा मानव कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष नानजी भाई गुर्जर की अध्यक्षता में राष्ट्र धर्मी माता पन्नाधाय वनस्थली प्रांगण में एकदिवसीय संगोष्ठी संपन्न हुई।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि राजस्थान

गुर्जर महासभा के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष मोहनलाल वर्मा ने कहा वैश्विक मानव जीवन को समृद्धि संपन्न बनाने के लिए प्रकृति पर्यावरण चेतना समूचे मानव समाज में जागृत करना आवश्यक है। प्रकृति पर्यावरण के अंतर्गत न केवल पौधारोपण बल्कि मानव जीवन की प्रत्येक घटना अंतर्निहित है। प्रकृति के प्रति प्रेम ही मनुष्य जीवन का अस्तित्व और आधार है। वैश्विक संस्कृति, धर्म, दर्शन सभी प्रकृति पर्यावरण चेतना के द्वारा ही अपनी सार्थकता को सिद्ध कर सकते हैं।

आशापुरा मानव कल्याण ट्रस्ट द्वारा राष्ट्र धर्मी माता पन्नाधाय स्मृति वनस्थली में अब तक लगभग 35,000 पौधे लगाए जाना एवं 125000 पौधे लगाने का संकल्प एक सराहनीय कार्य है। आशापुरा मानव कल्याण ट्रस्ट द्वारा मानव समाज के हित को दृष्टिगत रखते हुए कालिंजर ग्राम पंचायत को आत्मनिर्भर बनाने की दृष्टि से शिक्षा, संस्कार, रोजगार, पशुपालन एवं डेयरी जैसी विभिन्न परियोजनाओं पर कार्य किया जा रहा है।

प्रकृति पर्यावरण चेतना एवं मेवाड़ के इतिहास में राष्ट्रधर्मी माता पन्नाधाय की भूमिका को रेखांकित करते हुए उन्होंने बताया कि आज दुनिया जिस दौर से गुजर रही है, सांसारिक जीवन में अप संस्कृतिकरण जिस तेजी से बढ़ रहा है, उसको रोकने के लिए माता पन्नाधाय ने देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए जो बलिदान दिया है, उसके श्रेष्ठत्व को दुनिया के कोने-कोने तक पहुंचाने की आवश्यकता है।

आशापुरा मानव कल्याण ट्रस्ट द्वारा इस क्षेत्र में पर्यावरण पर कार्य करना उनके उत्कृष्ट संकल्प का परिणाम है, जिसमें राष्ट्रधर्मी माता पन्नाधाय की स्मृति में एक भव्य स्मृति मंदिर एवं विद्यालय निर्माण, जिसमें बालिकाओं को गुरुकुल शिक्षा पद्धति से शिक्षित और संस्कारित किया जाना प्रस्तावित है।

संगोष्ठी के प्रारंभ में ट्रस्ट पदाधिकारियों द्वारा अतिथियों का स्वागत सत्कार किया गया। संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेश महामंत्री छीतर लाल कसाना, आमेट पंचायत समिति प्रधान प्रतिनिधि एवं राजस्थान गुर्जर महासभा जिला राजसमंद के अध्यक्ष हजारीलाल गुर्जर, करेड़ा

उप प्रधान सुखलाल गुर्जर, देवगढ़ पंचायत समिति उप प्रधान गैरी लाल गुर्जर, भोपाल सागर पंचायत समिति उप प्रधान देशराज गुर्जर, राजाराम हिंदू गुर्जर झालावाड़, राजेंद्र सिंह सरधना बीकानेर, कैलाश सांमोंता राजसमंद, कालिंजर ग्राम पंचायत सरपंच शंकर लाल गुर्जर ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए अपने उद्बोधन में प्रकृति पर्यावरण के महत्व एवं

मेवाड़ के इतिहास में पन्नाधाय की भूमिका को विभिन्न पहलुओं से प्रतिभागियों के सम्मुख रखा। संगोष्ठी में करेड़ा पंचायत सरपंच सहित राजसमंद, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा से आए जनप्रतिनिधियों ने भी अपने विचार रखे।

आशापुरा मानव कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष नानजी भाई गुर्जर ने अपने उद्बोधन में राष्ट्र धर्मी माता पन्नाधाय वनस्थली एवं कालिंजर ग्राम पंचायत के ग्रामवासियों के हित में किए जा रहे कार्यों को बताते हुए सभी आगंतुक अतिथियों के प्रति आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। ट्रस्ट द्वारा सभी अतिथियों को वनस्थली में उत्पन्न पौधे वितरित किए गए। इस अवसर पर अतिथियों द्वारा वनस्थली क्षेत्र में पौधारोपण भी किया गया। संगोष्ठी के अंत में उपस्थित प्रतिनिधियों द्वारा उनके परिवार में संपन्न होने वाले मांगलिक कार्य में पौधारोपण करने का संकल्प लिया गया।

संगोष्ठी में राष्ट्रधर्मी माता पन्नाधाय जयंती 8 मार्च को 'राष्ट्रधर्मी मातृशक्ति पन्नाधाय प्रेरणा दिवस' घोषित करने के लिए राजस्थान एवं केंद्र सरकार से मांग करने का प्रस्ताव भी पारित किया गया।

राष्ट्र धर्मी माता पन्नाधाय स्मृति पर्यावरण चेतना यात्रा के ध्वज बाबा खाटूश्यामजी के चरणों में समर्पित किए गए

खाटूश्याम जी, 3 सितंबर। मुंबई थाने से खाटू श्याम राजस्थान के लिए राष्ट्र धर्मी माता पन्नाधाय स्मृति पर्यावरण चेतना यात्रा के ध्वज खाटूश्याम पहुंचने पर पुजारी संघ सीकर

के जिला अध्यक्ष शंकर लाल पुजारी, वरिष्ठ नागरिक परिसंघ, (बी.एम.एस.) के प्रदेश अध्यक्ष विद्याधर शर्मा, राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष मोहनलाल वर्मा ने पदयात्रियों का स्वागत सत्कार किया।

आशापुरा मानव कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष नानजी भाई गुर्जर ने खाटूश्याम पहुंचकर पर्यावरण चेतना का संदेश लेकर मुंबई से 1246 किलोमीटर की पैदल यात्रा तय करने वाले युवा दीपक सोलंकी निवासी कुंभलगढ़ राजसमंद, भैरव सिंह सिसोदिया निवासी सिसोदिया राजसमंद, निखिल राठोर जोधपुर के द्वारा पैदल चलकर मार्ग में राष्ट्रमाता पन्नाधाय के बलिदान एवं वर्तमान समय में प्रकृति प्रदूषण को ध्यान में रखते हुए मानव जीवन को स्वस्थ बनाने के लिए प्रकृति पर्यावरण चेतना के प्रति जन समाज का ध्यान आकर्षित किया।

युवाओं के इस सराहनीय कार्य के लिए वरिष्ठ नागरिक परिसंघ राजस्थान, राजस्थान गुर्जर महासभा, प्रदेश पुजारी महासंघ एवं कमल सिंह सोलंकी एवं श्रीमती सीता नाथू सिंह सोलंकी ने भी पदयात्रियों का स्वागत सत्कार किया।

इस अवसर पर वक्ताओं ने राष्ट्रधर्मी माता पन्नाधाय के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को राजस्थान एवं भारत सरकार द्वारा पाठ्य पुस्तकों में सम्मिलित करने के लिए आशापुरा मानव कल्याण ट्रस्ट द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए सरकार का ध्यान इस मांग की ओर आकर्षित किया।

आशापुरा मानव कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष नानजी भाई गुर्जर ने ट्रस्ट द्वारा पर्यावरण के लिए किये जा रहे कार्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि राजसमंद जिले की कुंभलगढ़ तहसील के कालिंजर ग्राम पंचायत में राष्ट्रधर्मी माता पन्नाधाय वनस्थली विकसित की जा रही है। वनस्थली में 35,000 पौधे लगाए जा चुके हैं और वर्ष 2025 में 1,25,000 पौधे लगाने का लक्ष्य है।

राजस्थान प्रदेश वरिष्ठ नागरिक परिसंघ के अध्यक्ष विद्याधर शर्मा ने सभी यात्रियों एवं अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

अविनाशी युगल तत्त्व स्त्री-पुरुष दाम्पत्य जीवन दृष्टि दर्शन

✍ डॉ. मोहन लाल वर्मा

आदिगुरु माता पिता को श्रद्धा पर्व पर समर्पित रचना

संदेशा आया है, प्रियतम शिव जी का राधा अष्टमी पर राधा अवतार एवं पार्वती का जन्माष्टमी पर श्री कृष्ण अवतार

अवतार क्या है?

मोहन प्रिया, अंतर्यामी,
जन्म जन्म संगी, हृदयेश्वरी,
महा योगेश्वर शिव रूपा श्री राधा सर्वेश्वरी का,
महा योगेश्वरी शिवा,
कृष्ण मोहन रूप धारी,
अंतर्मन मनोभाव अंतरंग
प्रियतम प्यारे के नाम,
संदेशा आया है,
मत हो उदास प्यारे,
तेरे आने की बाट जोह जोह,
बृजेश्वरी राधे हारी रे,
कृष्ण मोहन प्यारे,
मनमोहन, अब आ भी जाओ,
संदेशा आया है,

महा भागवत के आधार पर शिव जी का राधा अवतार कहा गया है।

एक बार परम कौतुकी लीलाधर भगवान श्री शिव जी एवं पार्वती के मध्य हुए निश्चय के अनुसार पृथ्वी और ब्रह्मा जी की प्रार्थना पर श्री पार्वती जी श्रीकृष्ण रूप में तथा श्री शिव जी राधा रूप में प्रकट हुए। यह एक कल्प में श्री राधा कृष्ण के अवतार का बाहरी रहस्य है। भगवान और भगवती के अवतार की गूढ़ अभिसन्धि को तो दूसरा कौन जा सकता है।

उल्लेख है एक बार शिव जी ने पार्वती जी से कहा- देवि! यदि मुझ पर तुम प्रसन्न हो तो तुम पृथ्वी तल पर कहीं पुरुष रूप से अवतार लो और मैं स्त्री रूप धारण करूंगा। यहां जैसे मैं तुम्हारा प्रियतम स्वामी और तुम मेरी प्राण प्यारी भार्या हो, इस प्रकार वहां तुम मेरे स्वामी तथा मैं तुम्हारी पत्नी बनूंगा। बस, यही मेरा अभीष्ट है। तुम मेरी सभी इच्छाओं को पूर्ण करती हो इसे भी पूर्ण करो।

महा योगेश्वर शक्तिमान की इच्छा पूर्ण करने के लिए शक्ति देवी ने अपनी स्वीकृति दे दी और कहा,,, नवीन मेघ के समान कांतिमय जो मेरी भद्रकाली नाम की मूर्ति है वही श्री कृष्ण रूप से पृथ्वी पर अवतार लेगी, अब आप भी अपने अंश से स्त्री रूप धारण कीजिए।

महा योगेश्वर शिव ने परम संतुष्ट होकर कहा-मैं तुम्हारी प्रिय कामना से भूतल पर नौ रूपों में प्रकट होऊंगा।हे शिवे! मैं स्वयं परम प्रेममय वृषभानु नंदिनी श्री राधा के रूप में अवतीर्ण होऊंगा और तुम्हारी प्राण प्रिय होकर तुम्हारे ही साथ विहार करूंगा। इसके अतिरिक्त मेरी आठ मूर्तियां आठ रमणियो के रूप में प्रकट होगी, वे ही मनोहर नैना श्री रुक्मणि और सत्यभामा आदि तुम्हारी आठ पटरानियां होगी। इसके अतिरिक्त जो मेरे यह भैरव गण है यह भी रमणी रूप धारण कर भूमि पर अवतीर्ण होंगे।

देवी ने कहा-आपकी इच्छा पूर्ण हो, मैं आपकी इन सभी मूर्तियों के साथ यथोचित बिहार करूंगी। हे प्रभो! मेरी जय तथा विजय नाम की जो दोनों सखियां है वे पुरुष रूप में श्री दामा और सुदामा होगी। विष्णु भगवान के साथ मेरा पहले निश्चय हो चुका है, वह हलायुध रूप में मेरे बड़े भाई होंगे और सदा मेरे प्रिय कार्यों का साधन करेंगे। महाबली का नाम बलराम होगा। इस प्रकार मैं तुम्हारा कार्य सिद्ध कर अपनी महती कीर्ति की स्थापना करके पुनः भूतल से लौट आऊंगी।

(कल्याण शक्ति अंक पृष्ठ 424 से साभार)

लौकिक दृष्टि से यह कथात्मक दृष्टांत जगत में स्त्री पुरुष शरीर अंतर्मन अंतरंग नारी-नर मैत्री-प्रेम और विवाह की सशक्त अभिव्यक्ति है। आध्यात्मिक दृष्टि से जीव आत्मा

और परमात्मा अविनाशी तत्व है। लिंग शरीर धारी स्त्री पुरुष अंतर्मन अंतरंग मैत्री और प्रेम जीवात्माओं में घटित होता है। देह तत्व विज्ञान के अनुसार लिंग शरीर भी चार है, स्थूल, सूक्ष्म और कारण का विध्वंस होना निश्चित है, तत्पश्चात ही दिव्य देह की प्राप्ति है।

प्रति वाले महापुरुषों के अनुसार 'यथार्थ में भू-मंडल पर सूर्य रश्मि चंद्र चंद्रिका चंद्रमुखी सोम आहूति रूपी अग्नि संस्पर्श' दिव्य अग्नि से अवतार हृदय देश में हुआ करते हैं।

शिक्षकों का सम्मान : ज्ञान का दीपक और समाज का आधार -डॉ. चौधरी

शिक्षक, केवल एक पेशा नहीं, बल्कि एक मिशन है जो समाज को सही दिशा दिखाता है। वे हमारे जीवन में ज्ञान का दीपक जलाते हैं और हमें सही-गलत का फर्क सिखाते हैं। यही कारण है कि दुनिया भर में शिक्षकों के सम्मान के लिए एक दिन समर्पित है। भारत में, यह दिन 5 सितंबर को डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है, जबकि विश्व स्तर पर यह 5 अक्टूबर को मनाया जाता है। भारत में शिक्षक दिवस की शुरुआत एक महान शिक्षाविद्, दार्शनिक और भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन के साथ हुई। जब उनके छात्रों ने उनका जन्मदिन भव्य रूप से मनाने की इच्छा व्यक्त की, तो उन्होंने विनम्रतापूर्वक कहा, 'मेरे जन्मदिन को अलग से मनाने के बजाय, क्यों न इस दिन को भारत के सभी शिक्षकों के सम्मान में समर्पित किया जाए?' उनके इस विचार ने 5 सितंबर को राष्ट्रीय शिक्षक दिवस के रूप में पहचान दिलाई।

यह दिन सिर्फ एक छुट्टी नहीं, बल्कि एक अवसर है जब हम अपने गुरुओं के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। स्कूलों और कॉलेजों में छात्र अपने शिक्षकों के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम, नाटक और सम्मान समारोह आयोजित करते हैं। वे अपने शिक्षकों को कार्ड, फूल और उपहार देकर उनके योगदान को स्वीकार करते हैं। यह परम्परा हमें याद दिलाती है कि एक शिक्षक का महत्व कितना गहरा होता है। वे न केवल हमें पाठ्यपुस्तकें पढ़ाते हैं, बल्कि हमें जीवन के मूल्यों और नैतिक सिद्धांतों से भी परिचित कराते हैं।

विश्व शिक्षक दिवस : वैश्विक एकता का प्रतीक भारत के राष्ट्रीय शिक्षक दिवस के विपरीत, विश्व शिक्षक दिवस हर साल 5 अक्टूबर को मनाया जाता है। इस दिन की शुरुआत 1994 में यूनेस्को और अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) द्वारा की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य दुनिया भर के शिक्षकों की स्थिति, उनके अधिकारों और जिम्मेदारियों पर ध्यान केंद्रित करना है।

1966 में यूनेस्को और ILO की एक संयुक्त बैठक में शिक्षकों की स्थिति से संबंधित सिफारिशों को अपनाया गया था। इसी ऐतिहासिक क्षण की याद में 5 अक्टूबर को विश्व शिक्षक दिवस के रूप में घोषित किया गया। यह दिन हमें याद दिलाता है कि शिक्षा एक वैश्विक प्राथमिकता है और शिक्षकों को सशक्त बनाना भविष्य में निवेश करने जैसा है। इस दिन विभिन्न देशों में शिक्षा की गुणवत्ता, शिक्षकों के प्रशिक्षण और उनके कार्यस्थल की स्थितियों में सुधार के लिए चर्चाएं और सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं।

राष्ट्रीय और विश्व शिक्षक दिवस में प्रमुख अंतर- इन दोनों दिनों का उद्देश्य एक ही है : शिक्षकों का सम्मान। फिर भी, उनमें कुछ महत्वपूर्ण अंतर हैं- भारत में यह 5 सितंबर को मनाया जाता है, जबकि विश्व स्तर पर यह 5 अक्टूबर को मनाया जाता है। भारतीय शिक्षक दिवस डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन से जुड़ा है, जबकि विश्व शिक्षक दिवस यूनेस्को और ILO द्वारा शिक्षकों की स्थिति पर की गई चर्चा को याद करता है।

क्षेत्र : राष्ट्रीय शिक्षक दिवस केवल भारत में मनाया जाता है, जबकि विश्व शिक्षक दिवस 100 से अधिक देशों में मनाया जाता है।

शिक्षक का महत्व : समाज की नींव - कोई भी समाज

शिक्षकों के बिना प्रगति नहीं कर सकता। वे भविष्य की पीढ़ी को आकार देते हैं, उन्हें ज्ञान और कौशल से लैस करते हैं। एक शिक्षक सिर्फ एक जानकारी देने वाला व्यक्ति नहीं होता; वह एक मार्गदर्शक, एक मित्र और एक संरक्षक होता है। वे हमें यह सिखाते हैं कि कैसे सोचना है, न कि क्या सोचना है। डॉ. राधाकृष्णन ने सही कहा था, 'शिक्षण एक पेशा नहीं है, बल्कि एक कला है।' यह कला धैर्य, करुणा और दृढ़ता की मांग करती है। आज की दुनिया में, जहाँ तकनीक तेजी से बदल रही है, शिक्षकों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। वे छात्रों को डिजिटल युग में नेविगेट करने और सही जानकारी को गलत से अलग करने में मदद करते हैं।

चाहे वह भारत में 5 सितंबर हो या दुनिया में 5 अक्टूबर, शिक्षक दिवस एक महत्वपूर्ण अनुस्मारक है कि हमें अपने शिक्षकों के प्रति हमेशा कृतज्ञ रहना चाहिए। यह दिन हमें अपनी जड़ों से जुड़ने और उन लोगों को याद करने का अवसर देता है जिन्होंने हमें आज यहाँ तक पहुँचने में मदद की है।

विश्व के अन्य देशों में शिक्षक दिवस- विश्व के कई देशों में शिक्षक दिवस को अलग-अलग तारीखों और अनूठे तरीकों से मनाया जाता है, जो उस देश की संस्कृति और इतिहास को दर्शाते हैं। यहाँ कुछ प्रमुख देशों में शिक्षक दिवस मनाने के तरीके और तारीखों का विवरण दिया गया है-

संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) तारीख- मई के पहले पूरे सप्ताह का मंगलवार।

कैसे मनाते हैं- अमेरिका में शिक्षक दिवस एक पूरे सप्ताह तक मनाया जाता है, जिसे 'टीचर एप्रिसिएशन वीक' (Teacher Appreciation Week) कहते हैं। इस दौरान, छात्र और माता-पिता अपने शिक्षकों को धन्यवाद देने के लिए कार्ड, फूल और छोटे उपहार देते हैं। कई स्कूलों में विशेष कार्यक्रम और दोपहर के भोजन का आयोजन किया जाता है, जहाँ शिक्षकों को सम्मानित किया जाता है।

चीन तारीख- 10 सितंबर, कैसे मनाते हैं- चीन में 10 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। इस दिन छात्रों द्वारा शिक्षकों के सम्मान में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। छात्र अपने शिक्षकों को फूल और कार्ड देते हैं। हालांकि, चीन में कई लोग कन्फ्यूशियस (Confucius) के जन्मदिन (27 अगस्त) को ही शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की वकालत करते हैं, क्योंकि वे एक महान शिक्षाविद् और दार्शनिक थे।

रूस तारीख- 5 अक्टूबर, कैसे मनाते हैं- रूस में 5 अक्टूबर 1994 से शिक्षक दिवस मनाया जाता है, जो विश्व शिक्षक दिवस के साथ मेल खाता है। पहले यह अक्टूबर के पहले रविवार को मनाया जाता था। इस दिन, छात्र अपने शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए उपहार और फूल लेकर आते हैं। सरकार भी इस दिन उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले शिक्षकों को सम्मानित करती है।

थाईलैंड तारीख- 16 जनवरी, कैसे मनाते हैं- थाईलैंड में 16 जनवरी को राष्ट्रीय शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन सभी स्कूल बंद रहते हैं और छात्र अपने शिक्षकों को फूलों से बनी माला पहनाते हैं और उनका आशीर्वाद लेते हैं। यह दिन शिक्षकों के प्रति सम्मान व्यक्त करने और उनकी भूमिका को पहचानने का एक महत्वपूर्ण अवसर होता है।

तुर्की तारीख- 24 नवंबर, कैसे मनाते हैं- तुर्की के संस्थापक, मुस्तफा कमाल अतातुर्क (Mustafa Kemal Atatürk), ने शिक्षा के महत्व पर बहुत जोर दिया था। उन्होंने कहा था कि 'शिक्षक ही आने वाली पीढ़ी के वास्तुकार हैं।' इस बात को ध्यान में रखते हुए, तुर्की में 24 नवंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। इस दिन स्कूल और शिक्षण संस्थानों में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, और छात्र अपने शिक्षकों के प्रति सम्मान व्यक्त करते हैं।

लैटिन अमेरिका के कई देशमेक्सिको-15 मई को शिक्षक दिवस मनाता है। यह दिन 1917 में मेक्सिकन क्रांति के दौरान एक महत्वपूर्ण घटना से जुड़ा हुआ है।

चिली-16 अक्टूबर को शिक्षक दिवस मनाता है, जो चिली के शिक्षक संघ की स्थापना की वर्षगाँठ है।

कोलंबिया- 15 मई को शिक्षक दिवस मनाता है।

सभी देशों में तारीखें और परंपराएं अलग-अलग हैं, लेकिन हर जगह का मूल उद्देश्य एक ही है- उन व्यक्तियों को सम्मानित करना जो हमारे समाज को आकार देने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह एक वैश्विक मान्यता है कि शिक्षक हमारे जीवन और हमारे भविष्य के लिए ज्ञान, प्रेरणा और नैतिकता के स्तंभ है।

लेखक- डॉ. प्रभु चौधरी,
माधव कुंज, 213, ए- ब्लॉक तिरुपति ड्रीम्स
चिंतामन गणेश मंदिर रोड, उज्जैन 456006 मध्य प्रदेश

दिव्य श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर विशेष

आज श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर पूरी दुनिया भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं का गुणगान कर रही है। श्री कृष्ण की वात्सल्य लीला, श्री कृष्ण और गोपियों की रासलीला तथा राधा कृष्ण प्रज्ञा प्रेम संबंध पर विशेष रूप से साहित्यकारों द्वारा अपनी रचनाओं का प्रस्तुतीकरण किया जा रहा है।

श्री राधाकृष्ण जगत का आदि कारण है, बृहदारण्यक 3/9/2 में शकल के पुत्र विदग्ध की शंकाओं का समाधान करते हुए महर्षि याज्ञवल्क्य ने जिन 33 देवताओं का विवरण समझाया है वे सभी सूर्य के बिना अधूरे रहते, वे आठ वसु, एकादश रुद्र, द्वादश आदित्य, इंद्र तथा प्रजापति हैं। अर्जुन के व्यामोह को भंग करने का उपदेश देते हुए भगवान श्री कृष्ण कहते हैं मैं अदिति के 12 पुत्रों में विष्णु और ज्योतियोंमें किरणों वाला सूर्य हूं-गीता के अनुसार यदि भगवान रवि उदित ना हो तो सभी आंखों वाले चक्षु विहीन हो जाए, आंख सूर्य के प्रकाश से ही देखती है।

(मानव मन से आत्मा की यात्रा- यथार्थ गीता सार)

यथार्थ गीता के संबंध में संकलन कर्ता श्रद्धेय श्री अड़गड़ानंद जी महाराज के विचारों का कृपा प्रसाद

श्रीमद्भगवद्गीता को यथार्थ मानव शास्त्र प्रतिपादित करते हुए स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज का कथन है- श्री कृष्ण जिस स्तर की बात करते हैं, क्रमश: चल कर उसी स्तर पर खड़ा होने वाला कोई महापुरुष अक्षरश: बता सकेगा कि श्री कृष्ण ने जिस समय गीता का उपदेश दिया था, उस समय उनके मनोंगत् भाव क्या थे? मनोंगत् समस्त भाव कहने में नहीं आते। कुछ तो कहने में आ पाते हैं, कुछ भाव भंगिमा से व्यक्त होते हैं और शेष पर्याप्त क्रियात्मक है- जिन्हें कोई पथिक चलकर ही जान सकता है। जिस स्तर पर श्री कृष्ण थे, चलकर उसी अवस्था को प्राप्त महापुरुष ही जानता है कि गीता क्या कहती है। वह गीता की पंक्तियां ही नहीं दोहराता, बल्कि उनकी भावनाओं को भी दर्शा देता है, क्योंकि जो दृश्य श्री कृष्ण के सामने था, वही उस वर्तमान महापुरुष के समक्ष भी है। इसलिए वह देखता है, दिखा देगा, आप में जागृत भी कर देगा, पथ पर चला भी देगा। स्वामी श्री अड़गड़ानंद जी के अनुसार पूज्य श्री परमहंस जी महाराज भी उसी स्तर के महापुरुष थे। उनकी वाणी तथा अंतर प्रेरणा से मुझे गीता का जो अर्थ मिला, उसी का संकलन 'यथार्थ गीता' है।

स्वामी अड़गड़ानंद जी के अनुसार भगवान श्री कृष्ण ने अपने श्रीमुख से गीता का गायन जो सत्य बताता है-आत्मा! सिवाय आत्मा के कुछ भी शाश्वत नहीं है। गीता से सुख शांति मिलती ही है, अक्षय अनामय पद भी देती है।

स्वामी अड़गड़ानंद जी ने प्रतिपादित किया है कि धर्म सिद्धांत एक है, सभी प्रभु के पुत्र हैं, मानव के लिए मानव तन की सार्थकता-मनुष्य की केवल दो जाती है एक देवता और दूसरे असुर, जीवन में हर कामना ईश्वर से सुलभ है, भगवान की शरण में पापों का नाश होता है तथा ज्ञान की प्राप्ति होती है, भजन का अधिकार सबको है, भगवत पथ में बीज का नाश नहीं होता है, ईश्वर सभी प्राणियों के हृदय में निवास करता है, संपूर्ण इंद्रियों के व्यापार को, मन की चिंताओं को ध्यान से प्रकाशित हुई आत्मा में संयम रूपी योग अग्नि में योगी हवन करते हैं। करने का अधिकार उन सभी को है जिनको मनुष्य शरीर मिला है। अनन्य भक्ति के द्वारा ईश्वर देखा जा सकता है, आत्मा ही सत्य और सनातन है, विधाता और उससे उत्पन्न सृष्टि नश्वर है- कामनाओं से जिनकी बुद्धि आक्रांत है,मूढ़ बुद्धि ही परमात्मा के अतिरिक्त अन्य देवताओं की पूजा करते हैं। नियत विधि क्या है?

जो अक्षय ब्रह्म का परिचायक है उसका जप तथा मुझ एक परमात्मा का स्मरण तत्वदर्शी महापुरुष के संरक्षण में ध्यान। परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण ही धर्म का मूल है। उस अविनाशी ब्रह्म का, अमृत का, शाश्वत धर्म और अखंड एकरस आनंद का मै ही आश्रय हूं, विश्व के सारे धर्मों की सत्य धारा गीता का ही प्रसारण है, श्रीमद्भगवद्गीता में- संशय ,विषाद योग, कर्म जिज्ञासा, शत्रु विनाश प्रेरणा, यज्ञ कर्म स्पष्टीकरण, यज्ञ भोक्ता महापुरुषंस्थ महेश्वर, अभ्यास योग, समग्र जानकारी, अक्षर ब्रह्म योग, विभूति वर्णन, विश्वरूप दर्शन योग, भक्ति योग, क्षेत्र क्षेंत्रज्ञ विभाग योग, गुण त्रय विभाग योग, पुरुषोत्तम

योग, देवासुर संपर्क विभाग योग, ओम तत्सत् तथा श्रद्धा त्रय विभाग योग, सन्यास योग नामक 18 अध्याय हैं।

यथार्थ गीता द्वारा प्रतिपादित चिंतन के सूत्र दर्शाते हैं- जहां मन से आत्मा की यात्रा (गीता सार) अर्थात मौन, गूंज, अंतर्मन मंथन, अविरल प्रवाह, शब्दों की दृष्टि से गीता का सार निम्नांकित प्रकार है -

मानव मात्र के लिए मन की जानकारी, मानसिक स्वास्थ्य, मन से जुड़ी बीमारियां, तनाव पर विजय, मन:शक्ति ऐसी बातें आजकल नित्य चर्चा के केंद्र में है। इन बातों के अंतर्गत क्या सामान्य व्यक्ति में सुधार हो सकता है? क्या मंदबुद्धि बच्चों का बौद्धिक स्तर बढ़ सकता है? बुरी चीजों की लत मनोविकार है या मस्ती? सम्मोहन के संबंध में सही क्या है? गलत क्या है? मिंरगी की बीमारी क्यों जड़ जमा लेती है? क्या वह दूर हो सकती है? चिंता मुक्ति के लिए ध्यान धारणा कितनी उपयुक्त है? सब बातों के लिए मनोविज्ञान धर्म शास्त्रों का पठन-पाठन तथा दार्शनिक आध्यात्मिक मनोविज्ञान मानव मात्र की जिज्ञासा का विषय है। जिज्ञासा का शमन होना ही चाहिए।

इस दृष्टि से दार्शनिक अंतर्मन मंथन मनोविज्ञान अर्थात गीता सार पर चर्चा करते हैं। मनोविज्ञान और व्यवहार दोनों ही दृष्टि से यह प्रसंग स्वागत योग्य है, हमारे यहां कहा गया है-मन एवं मनुष्यात्मा कारण बंधमोंक्षयो: यह कथन आज आध्यात्मिक ही नहीं आंधि भौतिक दृष्टि से भी सही सिद्ध हो रहा है। पश्चिमी मनोविज्ञान के अनुसार मन और आत्मा नाम की कोई चीज ही नहीं थी जो कुछ था वह भौतिक क्रिया प्रतिक्रिया मात्र थी। फ्रायड के समय में इस में परिवर्तन हुआ, अब भी प्रमुख रूप से वस्तुनिष्ठ पश्चिमी मनोविज्ञान तथा आत्मानुभूति, आत्मदर्शन और सहज बोध को तूल देने वाले भारतीय दार्शनिक मनोविज्ञान में अंतर है। गीता जीवन दर्शन के रूप में विश्व दर्शन प्रतिपादित हुआ है। गीता में कर्तव्य विमूढ़ अर्जुन की शंकाओं का समाधान कृष्ण ने कुरुक्षेत्र की युद्ध भूमि में किया है। बहुत से विद्वानों ने गीता को एक रूपक के रूप में स्वीकार किया है। यथार्थ गीता के अनुसार इस रूपक में पांडव ज्योति और कौरव तम की शक्तियां प्रतीक हैं। मानव शरीर धर्म क्षेत्र का प्रतीक है। नेत्रहीन धृंत राष्ट्र व्यक्ति का अहम इगो है, जो सांसारिक सुखों में लीन रहता है। कृष्ण आत्माराम है और अर्जुन बुद्धि है। लोग अर्जुन को संकटग्रस्त अहम और कृष्ण को आत्मा स्वीकारते हैं।

मनुष्य का अहम् जब अपने अंतर्मन मंथन के माध्यम से अपनी आत्मा को पहचान लेता है और उसमें अपने को लय कर देता है तभी उसे दुख पीड़ा आदि से छुटकारा मिलता है। इस प्रकार उपनिषदों में प्रतिपादित आत्मा कृष्ण के रूप में अर्जुन अथवा व्यक्ति के अहम् को आत्मज्ञान प्राप्त करने का उपाय बताती हैं।

प्रकृति और पुरुष के संबंध में गीता की स्थापनाओं में पुरुष और प्रकृति को ब्रह्म का अंग माना गया है। गीता में परा और अपरा प्रकृति के दो भेद बताए गए हैं। परा प्रकृति जीव रुप में दिखाई पड़ती है और इसका स्वरूप चैतन्य है। अपरा प्रकृति के अंतर्गत पृथ्वी, जल, वायु, तेज, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार है। गीता में क्षर, अक्षर और पुरुषोत्तम तत्वों का उल्लेख है। अपरा प्रकृति क्षर तत्व है अपरा प्रकृति का ब्रह्म के साथ अनादि काल से संबंध है। परा प्रकृति अक्षर तत्व है और उसे जगत को धारण करने वाला भी मानते हैं। भगवान कृष्ण ने कहा है कि आठ प्रकार से विभक्त हुई अपरा प्रकृति मेरी प्रकृति है। इंद्रियां, मन और बुद्धि के द्वारा व्यक्ति भौतिक जगत और जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।अहंकार की क्षमता के द्वारा व्यक्ति किसी वस्तु से संबंध स्थापित करता है और फिर उसे अपना मान लेता है। अपने पराए का भेद अहंकार की उपज है। गीता के अनुसार व्यक्ति की आत्मा वही है जो सार्वभौम आत्मा है। लेकिन व्यक्ति अपनी निम्न स्तरीय मानसिक प्रकृति के कारण इस तथ्य से अपरिचित रहता है और इंद्रियों मन बुद्धि तथा अहंकार के वश में होकर अपने वास्तविक स्वरूप को जो कि ईश्वरीय है भूल जाता है। गीता की वैश्विक मानव मात्र के लिए सबसे बड़ी देन निष्काम भाव का प्रतिपादन है।

मनोविज्ञान के अनुसार जब किसी व्यक्ति की आशाएं भग्न होती है, तब वह अंग्रघर्षी होता है। अग्र घर्षण के मूल में भग्न आशाएं होती है। मनोविज्ञान के अनुसार भग्न आशा का कारण है, जब व्यक्ति अपनी आवश्यकताएं, आशाएं, आकांक्षाएं पूरी नहीं कर पाता तब वह भग्नाशा हो जाता है। पश्चिमी मनोविज्ञान का यह भी मत है कि व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं, आकांक्षाओं आदि से प्रेरित होकर ही कोई कार्य करता है। इनके अभाव में व्यक्ति में व्यवहार की संभावना नहीं है। गीता में आशा रहित निष्काम भाव से कार्य करने की बात कही गई है। जब व्यक्ति बिना किसी आशा के कार्य करता है तब भग्नांशा की संभावना नहीं होती और भग्नाशा के अभाव में अग्र घर्षण का प्रश्न ही नहीं उठता। इस प्रकार गीता के सारे रूप अंतर्मन मंथन दार्शनिक मनोविज्ञान के अनुसार आशा, निराशा के सिद्धांत को निर्मूल

करने के लिए निष्काम भाव का सिद्धांत प्रतिपादित किया गया है। यथार्थ में भारतीय दार्शनिक मनोविज्ञान व्यक्ति के आध्यात्मिक स्वरूप को मान्यता प्रदान करता है और पश्चिमी मनोविज्ञान व्यक्ति के जैविक स्वरूप को।

गीता के सारे रूप जब तक व्यक्ति इंद्रियों और मन को वश में नहीं करता तब तक उसे राग द्वेष के भाव को अनुभव करना पड़ता है। दूसरी दृष्टि से कहा जा सकता है कि व्यक्ति को ऐसे भावात्मक और सामाजिक समंजन के लिए प्रयास करना चाहिए जिसमें वह निष्काम भाव से कार्य कर सकें। गीता में सार रूप हम कह सकते हैं कि गीता मनोविज्ञान स्व:धर्म अर्थात अपनी क्षमता तथा प्रवृत्ति के अनुसार बिना किसी आशा के कार्य करने पर बल देती है। संक्षेप में गीता में सार रूप उपनिषद्, दार्शनिक मनोविज्ञान के तथ्यों का प्रतिपादन करते हुए निष्काम भावना के महत्व को इस प्रकार स्पष्ट किया गया है कि व्यक्ति संमजित जीवन व्यतीत कर सकें। गीता मानव मात्र के लिए पशुत्व से ऊपर उठकर आध्यात्मिक मानव बनने की दिशा में प्रेरित करने वाला अंतर्मन मंथन दार्शनिक मनोविज्ञान है। दार्शनिक मनोविज्ञान की दृष्टि से भारतवर्ष के न्याय, सांख्य, मीमांसा, वैशेषिक, योग और वेदांत भी दार्शनिक दृष्टि से मानव के द्वारा, अंतर्मन मंथन क्रियात्मक योग का उपदेश देते हैं।

राकेश गुर्जर को मातृशोक

जयपुर। राजस्थान गुर्जर महासभा युवा प्रकोष्ठ के प्रदेश मंत्री, भारतीय जनता पार्टी शांति नगर मण्डल के पूर्व अध्यक्ष एवं एनईआई मजदूर संघ (बीएमएस) के अध्यक्ष राकेश गुर्जर की माताजी श्रीमती राजूदेवी का

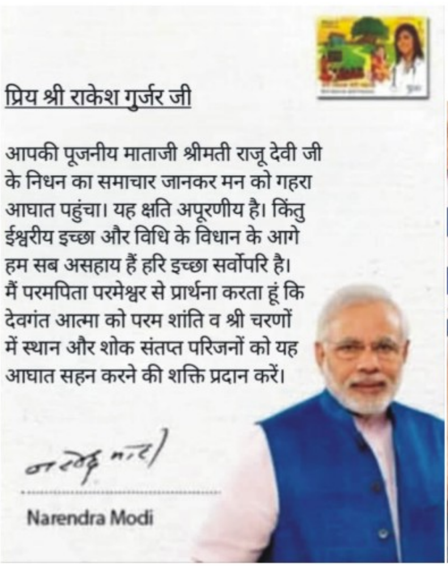

प्रिय श्री राकेश गुर्जर जी

आपकी पूजनीय माताजी श्रीमती राजू देवी जी के निधन का समाचार जानकर मन को गहरा आघात पहुंचा। यह क्षति अपूरणीय है। किंतु ईश्वरीय इच्छा और विधि के विधान के आगे हम सब असहाय हैं हरि इच्छा सर्वोपरि है। मैं परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि देवगंत आत्मा को परम शांति व श्री चरणों में स्थान और शोक संतप्त परिजनों को यह आघात सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

Narendra Modi

आकस्मिक निधन हो गया। राजस्थान वित्त आयोग के अध्यक्ष पूर्व मंत्री अरूण चतुर्वेदी, सिविल लाइन्स विधायक गोपाल शर्मा, प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष मोहन लाल वर्मा, अखण्ड भारत गुर्जर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. देवनारायण गुर्जर, राजस्थान गुर्जर महासभा जयपुर शहर जिलाध्यक्ष सरदार सिंह चेची सहित समाज के गणमान्य लोगों ने उनके निवास पर पहुँचकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

वहीं भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, जयपुर शहर सांसद मंजू शर्मा, भाजपा जयपुर शहर जिलाध्यक्ष अमित गोयल ने राकेश गुर्जर की माताजी के निधन पर शोक सन्देश भेजकर संवेदना व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिये परमात्मा से प्रार्थना करते हुए शोक संतप्त परिवार को इस दु:खद घड़ी में सांत्वना प्रदान की है। श्रीमती राजू देवी की तीये की बैठक में गुर्जर समाज एवं विभिन्न सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों ने सम्मिलित होकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

गुर्जर लोक संस्कृति में प्रचलित गुर्जर रोट महोत्सव

बगड़ावत भारत लोकवार्ता में उल्लेख है– माघ माह शुक्ल पक्ष की सप्तमी संवत् 968 में मालासेरी की डूंगरी स्थल पर सरोवर में विकसित कमल में भगवान श्री देवनारायण का अवतार हुआ। माता साडू भगवान श्री देवनारायण को लेकर गोठ दड़ावट चली गई। गोठ दड़ावट में राण के राजा द्वारा भेजे गये कपटी ब्राह्मणों तथा राजा की दूतियों द्वारा बालक श्री देवनारायण को मारने के प्रयत्न विफल होने के पश्चात् माता साडू भयभीत होकर देवनारायण की रक्षा के लिये उन्हें लेकर अपने पीहर मालवा के लिये गौवंश व ग्वालों को लेकर निकल पड़ी।

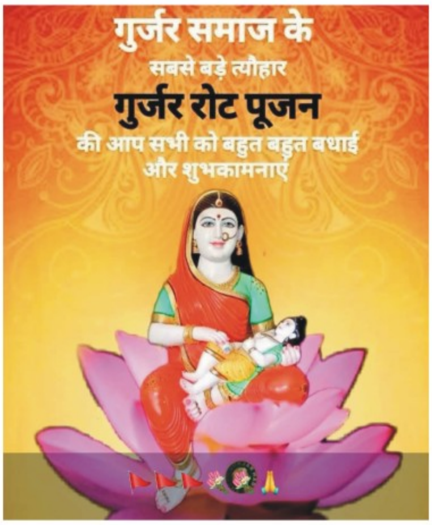

मालवा जाते समय मार्ग में घने जंगल और बीहड़ क्षेत्र में एक स्थान पर वृक्ष के नीचे छाया देखकर माता साडू ने भगवान श्री देवनारायण के पालने को वहाँ रख दिया। माता साडू स्वयं गौचारण करने लगी। श्री देवनारायण को भूख लगी तब वे शिशुवत दुग्धपान के लिये विलाप करने लगे। साडू माता को स्मरण नहीं रहा। सूर्य आकाश में दोपहर के समय तक चढ़ आये। उसी समय साडू माता को स्मरण आया और वह देवनारायण के लिये व्याकुल होकर उस स्थान पर पहुँची जहाँ उसने देवनारायण का पालना रखा था। माता साडू दृश्य देखकर व्याकुल हो गई, एक शेरनी पालने के ऊपर खड़ी होकर देवनारायण को अपने स्तनों से दूध पिला रही थी। शेरनी देवनारायण को खा नहीं जाये। इस आशंका से चिन्तित होकर साडू माता ने माँ दराड़ी की पुकार लगाई। मालवांचल में दराड़ी माता गुर्जर समाज में वर्तमान समय में रोट माता के रूप में पूजी जाती है। इस सम्बन्ध में लोकश्रुति प्रचलित है– माता साडू ने दराड़ी माता से निवेदन किया– यदि शेरनी मेरे पुत्र को छोड़ देगी तो मैं माता तेरे रोट चढ़ाऊंगी। गायों के तीन दिन के दूध से निर्मित रोट तूझे अर्पित करके जीमाऊंगी। साडू माता की प्रार्थना सुनकर माता का चमत्कार हुआ। शेरनी उस स्थान से प्रस्थान कर गई। माता साडू ने भागकर पालने में श्री देवनारायण को अपने आँचल से लगाया। माता का वात्सल्य उमड़ पड़ा। जिस स्थान पर पालना रखा हुआ था वहाँ वर्तमान समय में भीलवाड़ा बाईपास पर श्री देवनारायण पालना जी का विशाल मन्दिर निर्माणाधीन है। मालवा अंचल में गुर्जर समाज द्वारा परम्परागत रूप से तत्कालीन समय से ही गुर्जर रोट पूजा महोत्सव मनाने की परम्परा विकसित हुई जो आज भी जारी है। मालवा क्षेत्र का गुर्जर समाज अपने पशुधन के तीन दिन के एकत्रित दूध से यह रोट बनाकर दराड़ी माता को भोग रूप में अर्पित करके फिर स्वयं प्रसादी के रूप में अपने परिवार व कुल के लोगों सहित ग्रहण करता है। मालवांचल में गुर्जर रोट महोत्सव के अवसर पर दराड़ी माता एवं भगवान श्री देवनारायण की विशेष पूजा अर्चना करने की परम्परा प्रचलित है। इस सम्बन्ध में निम्न कविता उद्धरित है–

हे माँ दराडी (रोट माता)

है कुलदेवी, माँ हे कुलदेवी।
वैभव, शक्ति, धन की तु देवी।।
मालवा के गुर्जरों, की है माँ कुलदेवी।
है दुःख हरणी, माँ है सुख की देवी।।

हाथी ऐरावत, अश्व है उच्चैःश्रवा।
दुध का है सरोवर, पिये सब मैया।।
खीर-चूरमा का, लगे है माँ भोजन।

बनाकर के रोट, करे माँ हम पूजन।।

पाण्डुओं से तू, हमें है मिली माँ।
पूर्वजों से हमने, सुनी है ऐसी माँ।
माता साडू की, क्या परीक्षा है ली माँ।
तूने शेरनी बनकर, है रक्षा करी माँ।।

बिदा होये जो भी, कुल की कन्याएँ।
सदा खुश रखना, उन्हें तू मैय्या।
कमी ना रहे माँ, धन्य धान्य कि उनको।
कृपा ऐसी करना हे रोट मैय्या।।

जो भी आती है बहुएँ, नई-नई कुल में।
वो लगै सबसे पहले, तुझे पाव मैय्या।
मनोकामना उनकी, सारी तु मैय्या।
सदा पूरी करना ये है बिनती मैया।।

स्व. राजेन्द्र गुर्जर (दौराता) को भुलाए न भूल पाएंगे

श्री राजेंद्र कुमार दौराता का जन्म 25 दिसम्बर 1964 को माता श्रीमती गुलाबदेवी एवं पिता श्री रामनारायण दौराता के परिवार में हुआ।

राजेंद्र कुमार दौराता ने अपनी शिक्षा 10वीं तक प्राप्त की। दौराता अपनी योग्यता एवं दक्षता के आधार पर परिवहन विभाग (R.T.O) में ड्राइवर पर नियुक्त हुए। इन्होंने अपने जीवनकाल को अपने माता-पिता के लिए सम्माननीय एवं एक आदर्श पुत्र का नाम दिया। राजेंद्र कुमार दौराता अपने माता-पिता स्वर्गीय श्री रामनारायण एवं स्वर्गीय श्री गुलाब देवी के 6 पुत्रों में सबसे छोटे पुत्र हैं तथा अपने पिता के अनुरूप सरकारी कर्मचारी थे। दौराता ने सरकारी सेवा में रहते हुए परिवार का विकास किया। उनका विवाह श्री रमेश चन्द्र बसवा एवं स्वर्गीय कमला देवी की पुत्री अनीता गुर्जर के साथ सम्पन्न हुआ। राजेंद्र कुमार दौराता ने सरकारी सेवा में राजस्थान में अपनी सेवायें कोटा/बीकानेर/दौसा/सवाई माधोपुर/हनुमानगढ़ में दी। वे सरकारी सेवा के दौरान राजस्थान परिवहन विभाग कर्मचारी संघ में अध्यक्ष पद पर नियुक्त हुए। उन्होंने कर्मचारियों के हित में कार्य किये। उनका अध्यक्ष पद का कार्यकाल स्वार्थहीन तथा जिम्मेदारीपूर्वक रहा।

राजेंद्र कुमार दौराता के तीन बच्चे हैं जिनमें सबसे बड़े पुत्र अनिल कुमार दौराता जिनका विवाह जनता कॉलोनी निवासी श्री भंवर जी बारवाल की पुत्री आरती बारवाल के साथ सम्पन्न हुआ। अनिल कुमार दौराता सामूहिक विवाह आयोजन समिति में एवं भारतीय जनता पार्टी में जयपुर युवा मोर्चा में उपाध्यक्ष पद पर नियुक्त हैं और साथ ही सामाजिक कार्यकर्ता के साथ निजी व्यवसाय में कार्यरत है। इनकी एक पुत्री वर्षा दौराता है। जिसका विवाह नंदपुरी बाईस गोदाम निवासी स्वर्गीय श्री हीरालाल हरियाणा के पुत्र चेतन हरियाणा के साथ सम्पन्न हुआ। चेतन हरियाणा राजस्थान स्टेट मोटर विभाग जयपुर में सहायक प्रशासनिक अधिकारी पद पर कार्यरत हैं। इनके सबसे छोटे पुत्र आलोक दौराता निजी व्यवसाय एवं अध्ययनरत हैं। इनके विवाह हेतु राजेंद्र कुमार दौराता ने रामगढ़ मोड़ निवासी राजकुमार कोली की पुत्री नीलम गुर्जर के साथ सगाई समारोह को सम्पन्न कर विवाह हेतु तय किया है। इनके सबसे बड़े दोहिते जयत हरियाणा एवं पृथ्वी हरियाणा है। एक पौत्री मनस्वी दौराता है।

राजेंद्र कुमार दौराता का भरा-पूरा परिवार है। राजेंद्र कुमार दौराता गुर्जर समाज सेवा में एवं भामाशाहों में अपना उच्च स्थान रखते हैं। इन्होंने अपने जीवनकाल में अनेक समाजसेवी कार्य किये हैं। दौराता सरकारी सेवा में अपना कार्य निष्ठा व ईमानदारी से निर्वाह करते हुए 31 दिसंबर, 2024 को सेवानिवृत्त हुए। इनका अपना पैतृक घर पोलोविक्ट्री में स्थित है इसके साथ ही अपना निजी निवास स्थान- प्रताप नगर शास्त्री नगर में है। जहां अपने संपूर्ण परिवार के साथ निवास करते हैं। इन्होंने अपने संपूर्ण जीवन एक ईमानदारी तथा सम्मानजनक पूरा किया तथा अपने परिवार के सदस्यों को भी इस तरह जीवन का जीने का सीख दी। दौराता का हार्टअटैक के कारण आकस्मिक निधन 7 जुलाई, 2025 को हो जाने पर परिवारजनों को बेहद आघात लगा, असहनीय दु:ख को परिवारजन आज भी भुला नहीं पा रहे हैं।

देव चेतना पत्रिका के मुख्य संरक्षकगण

- श्री आर.के. अग्रवाल, मुख्य संरक्षक
- श्री बालाराम पोसवाल, मुख्य संरक्षक
- प्रधान एम.सी. छोकर, गुर्जर समाज कल्याण परिषद, पंचकूला
- श्री हरिनारायण बारवाल, जयपुर, मुख्य संरक्षक
- वृद्धिचन्द गुर्जर, उपाध्यक्ष, राज. गुर्जर महासभा
- श्री रवि लोमोड़, मुख्य संरक्षक
- श्री बाछूराम डोई, जयपुर, मुख्य संरक्षक
- श्री पदमसिंह कसाना, मुख्य संरक्षक
- श्री भँवरसिंह धाभाई, बीबासर-झुंझुनूं, मुख्य संरक्षक
- देशराज गुर्जर, पारी, चित्तौड़, मुख्य संरक्षक
- श्री देवनारायण धाभाई, मुख्य संरक्षक

- गिर्राज पोसवाल, मुख्य संरक्षक
- डॉ. रामकुमार सिराधना, मुख्य संरक्षक
- श्री राम मणगस, मुख्य संरक्षक
- श्री जीवनराम मावरी, मुख्य संरक्षक
- श्री छीतरलाल कसाना, मुख्य संरक्षक
- श्री मुकेश सिन्धु, मुख्य संरक्षक
- श्री संदीप नरसल, मुख्य संरक्षक
- जगदीश लोहिया दिल्ली, मुख्य संरक्षक
- श्री रामपाल फागणा, मुख्य संरक्षक
- श्री चेतन डोई, मुख्य संरक्षक
- श्री श्रवणलाल चाड़, मुख्य संरक्षक

- श्री शंकरसिंह बजाड़, मुख्य संरक्षक
- मनीष भरगड़, मुख्य संरक्षक
- श्री रामफूल डोई, मुख्य संरक्षक
- श्री शैतान सिंह अवाना, मुख्य संरक्षक
- श्री अखिल अवाना, मुख्य संरक्षक
- श्री महेन्द्र सिराधना, मुख्य संरक्षक
- श्री नीमसिंह गुर्जर, मुख्य संरक्षक
- श्री देशराज चौहान, मुख्य संरक्षक
- श्री दुष्यन्त सिंह तोमर, मुख्य संरक्षक
- श्री रामधन चेची, मुख्य संरक्षक
- श्री विनोद उमरवाल, मुख्य संरक्षक

- श्री संजय सिंह गुर्जर, मुख्य संरक्षक
- श्री दिनेश कसाना, मुख्य संरक्षक
- श्री ओमप्रकाश जांगल, मुख्य संरक्षक
- राजू अमावता, मुख्य संरक्षक
- श्री मुकेश सुकल, मुख्य संरक्षक
- श्री महेन्द्र सिंह चेची, मुख्य संरक्षक
- श्री मंगल सिंह गुर्जर, मुख्य संरक्षक
- श्री नन्दलाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक
- श्री श्रवण लाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक
- श्री नवरतन बारवाल, मुख्य संरक्षक
- श्री राजेन्द्र फागणा, मुख्य संरक्षक

- श्री प्रेमसिंह अवाना, मुख्य संरक्षक
- श्री बीरबल प्रसाद, मुख्य संरक्षक
- श्री ओमप्रकाश भड़ाना, मुख्य संरक्षक
- श्री मंगलाराम खटाणा, मुख्य संरक्षक
- श्री पुरुषोत्तम कसाना, मुख्य संरक्षक
- श्री सीताराम कसाना, मुख्य संरक्षक
- श्री राधेश्याम छावड़ी, मुख्य संरक्षक, न.पा.चेयरमेन-मण्डावा
- श्री फूलचन्द बैंसला, मुख्य संरक्षक
- डॉ. बी.एल. गोचर, मुख्य संरक्षक
- श्री रामपाल सिंह लोमोड़, मुख्य संरक्षक
- श्री राजेन्द्र सिंह दांता, मुख्य संरक्षक

- एडवोकेट शैलेन्द्र धाभाई, मुख्य संरक्षक
- श्री मोतीलाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक
- श्री शंकरलाल छावड़ी, मुख्य संरक्षक
- श्री हनुमान गुर्जर गरणिया, मुख्य संरक्षक
- श्री महेश धाभाई, मुख्य संरक्षक
- श्री रामगोपाल गुर्जर नेकाड़ी, मुख्य संरक्षक
- श्री लालचन्द आरोलिया, मुख्य संरक्षक
- श्री रघुनाथ गुर्जर, मुख्य संरक्षक
- श्री एच.आर. कपासिया, फरीदाबाद, मुख्य संरक्षक
- श्री रामधन डोई, जयपुर मुख्य संरक्षक
- श्री प्रमोद तँवर, जयपुर मुख्य संरक्षक

- श्री रामप्रकाश धाभाई, मुख्य संरक्षक
- श्री कैलाश गुर्जर, मुख्य संरक्षक
- श्री विनोद कसाणा, मुख्य संरक्षक
- महन्त मंगलनाथ जी, मुख्य संरक्षक
- मोहनलाल सराधना, भीलवाड़ा, मुख्य संरक्षक
- प्रकाश चन्द पोसवाल, सीकर, मुख्य संरक्षक
- हरिराम डोई, मुख्य संरक्षक
- श्री राजेन्द्र बसवा, मुख्य संरक्षक
- श्री दुर्गाशंकर बारवाल, मुख्य संरक्षक
- श्री त्रिभुवन सिंह पंवार, मुख्य संरक्षक
- श्री उगमा राम गुर्जर, मुख्य संरक्षक

- श्री नानगराम कसाना, मुख्य संरक्षक
- श्री शंकर लाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक
- श्री देवेन्द्र सिंह गुर्जर, मुख्य संरक्षक
- श्री देवी लाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक
- श्री इन्द्रमल गुर्जर, मुख्य संरक्षक
- श्री शंकर लाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक
- श्री गोपाल गुर्जर, मुख्य संरक्षक
- श्री हरीश चन्द भाटी, मुख्य संरक्षक
- श्री मोहनलाल गुर्जर, रायड़ा, मुख्य संरक्षक
- श्री लक्ष्मण गुर्जर, मुख्य संरक्षक
- श्री ललित गुर्जर चौहान, भीलवाड़ा, मुख्य संरक्षक

DEV CHETNA Pub. Date : 5 September, 2025 Postal Reg. No. IR/ JaipurCity/ 426/ 2025-27
RNI No. RAJHIN/2013/50503 Posted Date : 11th September, 2025

ISO 9001:2015 CERTIFIED

JAI ASHAPURA HYDRAULICS

Manufacturer of All Type of Hydraulic Lift...

NANJIBHAI GURJAR
MANAGING DIRECTOR

SINCE:2003

INDIA'S LARGEST INDIGENOUS MANUFACTURE OF HYDRAULIC LIFT

Covered Lift Model

Hospital Lift

Goods Lifts

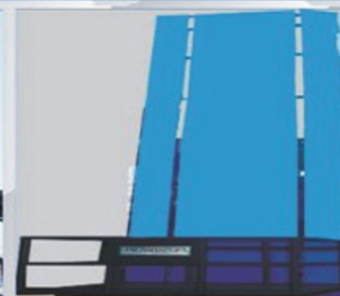

Cantilever Industrial Goods Lift

Hydraulic Goods Lift

Heavy Duty Lift

हमारे यह हर प्रकार की
हाईड्रोलिक लिफ्ट - हाईड्रोलिक मशीन
बनाते- बेचते है और सर्विस भी करते है

HYDRAULIC CYLINDERS

POWER PACK

HYDRAULIC CUTTING & BENDING PUNCHING PRESS

HYDRAULIC 'H' TYPE PRESS

sales@jahlifts.com
www.jahlifts.com

FACTORY
Ground Floor, Industrial Gala No.A-05 06
S.No: 26/02,Global Industrial Park
Valwada,Vapi
Dist: Valsad,Gujarat-396105,

Office No.4, Triveni Apartment,
Near Ashirwad Hospital,
Behind Dr.Parikh Nursing Home,
Chala-Vapi, Gujarat, 396191.

982 418 6890 / 982 473 6730

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक **मोहन लाल वर्मा** के लिये स्काईटैक प्रिन्टर्स, 10, बोराज ठाकुर का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर (राज.) से मुद्रित एवं म.नं. 3714, कालों का मोहल्ला, कुन्दीगर भैरूं का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक : **मोहन लाल वर्मा**
मो. 9782655549 E-mail: devchetnanews@gmail.com